Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 43 अंक-11
कल्पादि सम्वत् 1972949119

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 12 जून से 18 जून 2019 तक
ज्येष्ठ शुक्ल दशमी से आषाढ़ कृष्ण एकम् 2076 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

भगवान श्रीराम.. पृष्ठ- 2

इमली के औषधीय.. पृष्ठ- 4

ग्लोबल वार्मिंग जलवायु... पृष्ठ- 5

वीरता और शौर्य.. पृष्ठ- 8

अलगाववादियों का साथ.... पृष्ठ- 12

- भारत विरोधियों का दुःसाहस
- आतंकी तत्त्वों से यह सहानुभूति क्यों?
- कश्मीर में परिसीमन होना जरुरी
- क्या पाकिस्तान रूपी समस्या का कोई समाधान है?
- राम नाम के विरोध की राजनीति ममता को पड़ेगी भारी

कश्मीर के पुलवामा में सुरक्षाबलों से मुठभेड़ में ४ आतंकी मारे गए

आंतकियों का हो पूर्ण सफाया : हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

जम्मू कश्मीर के पुलवामा में सर्च ऑपरेशन के दौरान सुरक्षाबलों ने ४ आतंकी मार गिराए। सुरक्षाबलों को पंजरान लस्सीपोरा इलाके में आतंकियों के छिपे होने की जानकारी मिल गई थी। इसके बाद राष्ट्रीय राइफल्स, स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी), सीआरपीएफ और जम्मू कश्मीर पुलिस ने जाइंट ऑपरेशन शुरु किया था। आतंकियों के पास से एके–४७ राइफल समेत भारी मात्रा में गोला–बारूद बरामद किया गया है। जब शेष पृष्ठ 10 पर

२०२३ तक भारत अखंड हिन्दू राष्ट्र बनेगा : हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

गोवा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिंव श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने रामनाथी मंदिर, फोंड़ा, गोवा में हिन्दू जन जागृति समिति द्वारा परात्पर गुरू डा. जयंत बालाजी आठवले जी की प्रेरणा से आयोजित अष्टम अखिल भारतीय हिन्दू राष्ट्र अधिवेशन को संबोधित करते हुए कहा कि २०२३ तक हमें अखंड हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना है, जिसके लिये वर्तमान समय अनुकूल प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि हिन्दू, हिन्दी व हिन्दुस्तान के विकास के लिये, हिन्दू देवस्थलों की रक्षा के लिये, हिन्दू बहू–बेटियों की रक्षा के लिये तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को मजबूत बनाने के लिये भारत को अखंड हिन्दू राष्ट्र बनाना होगा। इस कार्य में हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। उन्होंने हिन्दूवादी संगठनों के सैकड़ों प्रतिनिधियों का आहवान किया कि हिन्दू राष्ट्र के निर्माण में सक्रियतापूर्वक जुट जायें। उन्होंने कहा कि हमें हिन्दू सम्मेलनों का नियमित आयोजन, हिन्दू जनांदोलन, लवजेहाद व धर्मांतरण के विरुद्ध युद्ध, हिन्दू युवकों का शारीरिक प्रशिक्षण, पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन, पदयात्रा, धार्मिक शिक्षा व साधना को बढ़ावा देने का कार्य तत्परतापूर्वक करना होगा। हमें देश में ऐसा वातावरण बनाना है ताकि भारतीय संविधान को संशोधित कर अखंड हिन्दू राष्ट्र भारत घोषित किया जा सके। अधिवेशन को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने अखिल भारत हिन्दू महासभा की गतिविधियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया। उन्होंने कहा कि हमारा संगठन जातिवाद को समाप्त करने व शुद्धि के कार्य में तत्परतापूर्वक कार्य कर रहा है। जिन शेष पृष्ठ 11 पर

भगवान श्रीराम ने किया नास्तिकतापूर्ण वचन का खण्डन

जाबालि राजा दशरथ के एक मंत्री थे। श्रीभरत के साथ चित्रकूट में वे भी गए थे। उन्होंने भरत का पक्ष लेकर श्रीराम को अयोध्या लौटाने के लिए नास्तिकतापूर्ण निम्नलिखित दस बातें कही थी

(१) संसार में कौन पुरुष किसका बन्धु है?

(२) जीव अकेला जन्म लेता है और अकेला ही नष्ट हो जाता है।

(३) जो मानव माता या पिता समझकर किसी के प्रति आसक्त होता है, उसे पागल के समान समझना चाहिए। यहाँ कोई किसी का कुछ भी नहीं है।

(४) जैसे कोई पुरुष कहीं जाते समय मार्ग में, धर्मशाला में ठहर जाता है और द्वितीय दिन वह व्यक्ति सब छोड़कर आगे बढ़ जाता है उसी प्रकार पिता, माता, घर और धन–ये सब आवास मात्र हैं, इनमें सज्जन पुरुष आसक्त नहीं होते हैं।

(५) राजा दशरथ आपके कोई नहीं थे और आप भी उनके कोई नहीं हैं। राजा दूसरे थे और आप भी दूसरे हैं।

(६) पिता जीव के जन्म में निमित्तमात्र है। माता के द्वारा गर्भ में धारण किये गए वीर्य और रज का परस्पर संयोग होने से पुरुष जन्म लेता है।

(७) जो मनुष्य अर्थ का त्याग कर धर्मपरायण है, वह शोक का पात्र है। वह इस जगत में धर्म के नाम पर केवल दुःख भोगकर मरता है।

(८) श्राद्ध में पितरों को दिया गया अन्न व्यर्थ होता है। मरा हुआ व्यक्ति अन्न नहीं खाता है। जब दूसरे का खाया हुआ अन्न दूसरे के शरीर में चला जाए तब बाहर गया हुआ व्यक्ति के लिए भी श्राद्ध ही कर देना चाहिए, साथ में भोजन देने की आवश्यकता नहीं है।

(९) देवताओं के लिए यज्ञ करो, दान दो, यज्ञ की दीक्षा ग्रहण करो, तपस्या करो, घर छोड़कर संन्यासी हो जाओ–इन बातों का उल्लेख दान में प्रवृत्ति कराने मात्र के लिए ग्रन्थों में किया गया है।

(१०) इस लोक के सिवाय दूसरा कोई लोक नहीं है–ऐसा समझिये, अतः मैं जो कहता हूँ, आप उसे कीजिए। आप अयोध्या चलकर राज्य पद ग्रहण कीजिए। इस लोक को ही सत्य समझिये और परलोकवाद को मिथ्या मानिये।

श्रीराम को जाबालि की कही हुई सभी बातें अत्यन्त अप्रिय लगीं। अतः उन्होंने वेदोक्त वचनों द्वारा उनका विधिवत खण्डन किया है। उन्होंने जाबालि से कहा कि आपने मेरा प्रिय करने के लिए जो बात कही है, वह करने योग्य नहीं है। वह पथ्य के समान प्रतीत होने पर भी अपथ्य है। जो व्यक्ति धर्म या वेद की मर्यादा को त्याग देता है, वह पापकर्म में प्रवृत्त हो जाता है। उसके आचार और विचार दोनों भ्रष्ट हो जाते हैं। इसीलिए वैसे व्यक्ति को सत्पुरुष सम्मान नहीं देते हैं। आचार ही यह बताता है कि कौन पुरुष उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ है और कौन अधम कुल में। कौन पुरुष पवित्र है और कौन अपवित्र है।

जाबालि जी! आपने जो आचार बताया है वह अनार्यों के लिए है। वैसा व्यक्ति बाहर से पवित्र–सा दिखने पर भी भीतर से अपवित्र होता है। वह वस्तुतः दुःशील होता है। आपका उपदेश धर्म का चोला पहने हुए है; परन्तु है महान अधर्म। इससे संसार में वर्णशङ्करता का प्रचार होगा। मैं आपके वचन से वेदोक्त शुभ कर्मों को छोड़ दूँ और विधिहीन कर्मों में लग जाऊँ तो कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान रखने वाला कौन पुरुष मुझे अच्छा समझकर आदर देगा? ऐसी स्थिति में मैं जगत् में दुराचारी तथा लोक कलंकित करने वाला माना जाऊँगा। जो व्यक्ति अपनी की हुई प्रतिज्ञा को तोड़ देता है, वह किस साधन से स्वर्ग प्राप्त कर सकता है? आपने जिस आचार का उपदेश किया है, वह किसका है, जिसका अनुसरण मैं करूँ? क्योंकि आपके कथनानुसार मैं पिता आदि में से किसी का नहीं हूँ। आपके बताये मार्ग से चलने पर प्रथम मैं स्वेच्छाचारी हो जाऊँगा। उससे समस्त जगत् ही स्वेच्छाचारी हो जाएगा; क्योंकि राजाओं के आचरण के अनुसार ही प्रजा का आचार होता है। सत्य का पालन ही राजाओं का सनातन धर्म है, अतः राज्य सत्य–स्वरूप है और संपूर्ण लोक सत्य में ही प्रतिष्ठित है। देवताओं और ऋषियों ने सदा सत्य का ही आदर किया है। सत्यवादी व्यक्ति अक्षय लोक प्राप्त करता है। सर्प के समान असत्य बोलने वाले से शेष पृष्ठ 10 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आपका सामाजिक कार्यों के प्रति विशेष रूझान रहेगा जिससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। गैर संस्थाओं से कुछ लोगों के अनुबन्ध भी हो सकते है। अनावश्यक कार्या में किया गया व्यय आपके पश्चाताप का कारण बन सकता है।

वृष : आपके जीवन का अन्धकार आपकी सकारात्मक सोच ही दूर सकती है। अतः प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व घबराये नहीं बल्कि पूरी उर्जा से उसे सफल बनाने का प्रयास करें। किसी महिला पर कटाक्ष न करें अन्यथा विवाद होने के आशंका प्रतीत हो रही है।

मिथुन : चिन्तन, काम, क्रोध, लोभ अहंकार आदि शब्दों से ऐसा लगता है कि आप बहुत बीमारियों से घिरें हुए है। प्रेम के प्रति उदासीन रहना भी इन बीमारियों का एक कारण जिसे आप आसानी से दूर भी कर सकते है।

कर्क : इस सप्ताह पारिवारिक स्थितियां आपके प्रतिकूल हो सकती है, इसलिए आप–अपनी वाणी पर नियंत्रण बनायें रखें। यदि आपको अपनी बात किसी से कहनी है, तो पहले उसका मूड समझ लें तभी कहें वरना आपकी योजना विफल हो सकती है।

सिंह : इस सप्ताह जो लोग किसी के साथ अनुबन्ध करने का प्रयास कर रहें, तो उससे पूर्व अपने नजदीकी लोगों से सलाह अवश्य लें। घर की योजनाओं को गुप्त रखने का प्रयास करें अन्यथा विरोधी अवसर से चूकने वाले नहीं है।

कन्या : आपका शरीरिक स्वास्थ्य आपके हाथों में है। आप शरीर का जितना ध्यान रखेंगे, शरीर भी आपका उतना ही ख्याल रखेगा। आरजक तत्वों से आप जितना दूर रहेंगे उतना ही जल्दी आप प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

तुला : इस सप्ताह आपका व्यवहार संवेदनशील रहेगा जिसके कारण आप ठगे भी जा सकते है, अतः सावधानी बरतें। पारिवारिक पृष्ठभूमि से जुड़े सवाल हल करने में आपको नाकों चने चबाने पड़ सकते है। दूर–दराज के रिश्तेदारों के घर आना–जाना बना रहेगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ सवाल आपको व्यथित कर सकते है, जिसकी वजह से आप–अपने कार्य ठीक से नहीं कर पायेंगे। सतत् संघर्ष से प्राप्त की गयी सफलता का आनन्द ही कुछ और होता है।

धनु : इस सप्ताह धन के लेन–देन में सावधानी बरतें। जो लोग अत्यधिक धूम्रपान करते हैं, वह लोग अपनी इस आदत पर नियन्त्रण बनायें अन्यथा किसी बड़े रोग का शिकार हो सकते है। व्यवसायी वर्ग को अपने काम के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोग धन को लेकर चिंतित हो सकते है, परन्तु यह चिन्ता का विषय नही है। जो बीत गया उस पर अधिक अफसोस करने की जरूरत नहीं है। आपके अपने ही लोग आप पर अन्दरूनी वार करने से चूकेंगे नहीं।

कुम्भ : नयें लोगों को रोजी व रोजगार के अवसर उपलब्ध होने की सम्भावना है जिससे उनकी मानसिक दशा कुछ अच्छी रहेगी। आपका हर कदम महत्वपूर्ण है इसलिए जो भी करें सोंच–समझकर ही करें तो बेहतर रहेगा।

मीन : इस सप्ताह आपकी आर्थिक समस्याओं का समाधन होगा जिससे आप कुछ जरूरी देनदारी दें सकेंगे। साहस व पराक्रम से किया गये प्रत्येक कार्य में आशा के अनुरूप सफलता मिलेगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं।।
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई।।

इसी तरह, बुद्धिमान् लोग कहते हैं कि सुकवि की कविता भी उत्पन्न और कहीं होती है और शोभा अन्यत्र कहीं पाती है (अर्थात् कवि की वाणी से उत्पन्न हुई कविता वहाँ शोभा पाती है जहाँ उसका विचार, प्रचार तथा उसमें कथित आदर्श का ग्रहण और अनुसरण होता है)। कवि के स्मरण करते ही उसकी भक्ति के कारण सरस्वती जी ब्रह्मलोक को छोड़कर दौड़ी आती हैं।।२।।

राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ। सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ।।
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरि जस कलि मल हारी।।

सरस्वतीजी की दौड़ी आने की वह थकावट रामचरितरूपी सरोवर में उन्हें नहलाये बिना दूसरे करोड़ों उपायों से भी दूर नहीं होती। कवि और पण्डित अपने हृदय में ऐसा विचार कर कलियुग के पापों को हरने वाने श्रीहरि के यश का ही गान करते हैं।।३।।

कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना।।
हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना।।

संसारी मनुष्यों का गुणगान करने से सरस्वती जी सिर धुनकर पछताने लगती हैं (कि मैं क्यों इसके बुलाने पर आयी)। बुद्धिमान् लोग हृदय को समुद्र, बुद्धि को सीप और सरस्वती को स्वाति नक्षत्र के समान कहते हैं।।४।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 12 जून से 18 जून 2019 तक

अध्यक्षीय

कश्मीर में परिसीमन होना जरुरी

कश्मीर में परिसीमन के मुद्दे के तूल पकड़ने के बाद सरकार ने कहा कि सरकार की तरफ से परिसीमन का कोई इरादा नहीं है लेकिन सरकारी स्तर पर जारी कवायदों को देखने और जिस तरह की खबरें आ रही हैं, उन्हें जानने के बाद यह दावे से कहा जा सकता है कि सरकार ने बयान इसीलिए जारी किया है ताकि विवाद बड़ा रूप न लेने पाए। गृहमंत्री बनने के बाद अमित शाह पूरे फार्म में हैं, कश्मीर में आर्टिकल ३७० और ३५ए को खत्म करने की सुगबुगाहट तो है ही, सूत्रों से खबर है कि केंद्र सरकार जम्मू कश्मीर में परिसीमन भी करा सकती है। जिस दिन अमित शाह ने गृहमंत्री का काम संभाला था, उसी दिन उन्होंने जम्मू कश्मीर के राज्यपाल सत्यपाल मलिक के साथ बैठक की थी, और इसी बैठक ने बता दिया था कि नए नवनियुक्त गृहमंत्री की पहली चुनौती मिशन कश्मीर है। जल्द ही आयोग का गठन हो सकता है। जम्मू कश्मीर में भाजपा के नेता चाहते हैं कि जल्दी ही परिसीमन किया जाना चाहिए। बहरहाल, अब इस परिसीमन की सियासत को भी समझना होगा। जम्मू कश्मीर विधानसभा में कुल १११ सीटें हैं। मगर जम्मू कश्मीर में सिर्फ ८७ सीटों पर ही चुनाव होते हैं। जम्मू कश्मीर के संविधान के सेक्शन ४७ के मुताबिक २४ सीटें खाली रखी जाती हैं। ये सीटें पाक अधिकृत कश्मीर के लिए खाली छोड़ी गई थीं। जानकारों की मानें तो इस गणित से भाजपा को सीधा फायदा होगा। परिसीमन के जरिए भाजपा अपना फायदा देख रही है। जम्मू क्षेत्र में कुल ३७ विधानसभा सीटें हैं। २०१४ के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने यहां २५ सीटें जीती थी। जम्मू क्षेत्र. में भाजपा का बड़ा दबदबा है। अगर परिसीमन हुआ तो खाली पड़ी २४ सीटें जम्मू क्षेत्र में जुड़ेंगी। भाजपा को लगता है कि परिसीमन से उसे फायदा होगा। जम्मू कश्मीर में १९६५ में परिसीमन किया गया था। राज्य के संविधान के मुताबिक जम्मू कश्मीर में हर १० साल के बाद परिसीमन होना था। मगर फारुक अब्दुल्ला सरकार ने २००२ में इस पर २०२६ तक के लिए रोक लगा दी थी और अब भाजपा दोबारा परिसीमन चाहती है। इस मामले पर महबूबा मुफ्ती पर भाजपा की ओर से पलटवार किया गया। बहरहाल, अब देखना यह है कि अपने शपथ पत्र में कश्मीर से धारा ३७० और ३५ ए हटाने का वादा करने वाली भाजपा कश्मीर में क्या कुछ क्रांतिकारी कदम उठाएगी।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

राम नाम के विरोध की राजनीति ममता को पड़ेगी भारी

यह भारत के आधुनिक लोकतंत्र का राज सिंहासन है जो इस देश के सर्वमान्य इष्ट पुरुष राम में संभावनाएं और आशंकाएं तलाशता रहता है। इस दौर में सिंहासन की लड़ाई राम के मानवीय आदर्शों को रौंदती हुई नए भारत का निर्माण करने की और अग्रसर हो रही है। यहां राम लोकसत्ता पाने का प्रतीक बना दिए गए हैं। यही राजनीतिक विचारधाराओं व समाज का अवमूल्यन बताता है। दरअसल, राम नाम पर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की आपत्ति का संकट सियासी होते हुए सामाजिक हो गया है। राम भारत के सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति हैं अतः ममता बनर्जी का राम नाम का कोई भी विरोध जनमानस को अप्रिय तो लगना ही था। यह भी इतिहास रहा है कि भारत देश में जब भी धर्म और सियासत का घालमेल हुआ, इसके नतीजे जन समुदाय को आशंकित करने लगते है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में सत्ता किसी की जागीर नहीं हो सकती और होना भी नहीं चाहिए। इस दशक की शुरुआत में वाम दल का साढ़े तीन दशक का शासन उखाड़ फेंककर सत्ता पर काबिज हुई ममता बनर्जी अनायास ही उस राह पर चल पड़ी है जहां से सियासी सफलता का दंभ और अहंकार बेकाबू हो जाता है। वैसे भी लोकसत्ता से जब भी सामाजिक असंतुलन बढ़ने लगता है, सत्ता भी वैसे–वैसे कमजोर हो जाती है। बंगाल की राजनीति में भाजपा का उभार ममता बनर्जी की उन्हीं नीतियों का परिणाम है जो जनता को आशंकित करती है। जब देश की सर्वोच्च अदालत रोहिंग्या को देश का दुश्मन बता रही थी तब ममता बंगाल में उनकी कॉलोनियां बसा रही थीं। बांग्लादेश घुसपैठ की मार से बदहाल इस राज्य में बांग्लादेशी कलाकार से वोटरों को लुभाने की अपील भी तो आत्मघाती है। सीबीआई के अधिकारियों से बदतमीजी कर देश के संघीय ढांचे को चुनौती देने की कोशिश भी तानाशाही का सबब बन गई। धार्मिक त्योहारों के समन्वय को बिगाड़ कर दुर्गा पूजा और ताजियों के बीच राजनीतिक हस्तक्षेप भी स्वीकार्य नहीं हो सकते। देश के अर्द्धसैनिक बलों को क्षेत्रीय चुनौती देकर राष्ट्रीय संप्रभुता के साथ खिलवाड़ कैसे किया जा सकता है। मुख्यमंत्री रहते हुए ममता बनर्जी ने स्वयं को पश्चिम बंगाल का सम्प्रभु बनाने की लगातार कोशिशें की। बंगाल का कथित सुसंस्कृत लोकाचार वसुदैव कुटुम्बकम को कई सदियों से अपने व्यवहार में प्रदर्शित करता रहा है। बंगाली विद्वत्ता ने ही जिन्ना के दंगों का सबसे ज्यादा दंश झेला था लेकिन वह दुर्गा पूजा की आस्था में कभी बाधा न बन सका। जाहिर है बंगाली धर्मनिरपेक्ष बने रहे लेकिन इसे अपनी व्यक्तिगत आस्था पर कभी हावी नहीं दिया। राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक व सामाजिक गतिशीलता भी बंगाल की इसी धरती से मिली। यही से शांति, राष्ट्रवाद और सार्वभौमिकता के संदेश समूचे भारत में गए। ऐसे में बंगाल की धरती को राष्ट्र से अलग कर क्षेत्रीयता के सांचे में ढालना संभव ही नहीं है और यहां की सियासी पार्टियां अक्सर यही करती रही। ममता बनर्जी किसी सूबे की मुख्यमंत्री हो सकती है लेकिन वह किसी की व्यक्तिगत आस्था को कैसे रोक सकती है। ममता दीदी ने देश के संघीय ढांचे को चुनौती देते देते आम जनमानस की व्यक्तिगत आस्था को भी निशाना बनाना चाहा तो सत्ता से दूर होती चली गई। अभी वे जनता को नब्ज को पकड़ कर सामंजस्य बिठाने का प्रयास नहीं कर रही है और यह उनके सियासी जीवन के लिए आत्मघाती हो सकता है। इस दौर में राम के नाम से सत्ता पाने के लिए उन्हें नारे में ढाल दिए जाने की प्रवृत्ति बढ़ गई है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने कभी सत्ता को नहीं सर्वोपरि समझा लेकिन उनके नाम से सत्ता पाने की होड़ मच जाएगी ऐसा उन्होंने भी नहीं सोचा होगा। राम के नाम पर उद्वेलित होने वाली ममता राम के अर्थ और जनमानस पर उसके प्रभाव को अब तक समझ नहीं सकी, यह भी आश्चर्यजनक है। प्रभु राम के चरित्र की मानवीय श्रेष्ठता भले ही किताबों में हो लेकिन वे हर दौर और हर समय मानव समाज को मार्ग दिखाती है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

इमली के औषधीय गुण

✍ रजनी शर्मा

अथाह वन सम्पदा ही हरे सोने की तरह कण-कण में बस्तर में बिखरी पड़ी है। यह सदियों से वहाँ के रहवासी आदिवासियों की समस्त आवश्यकताओं को आज तक पूर्ण करती आ रही है, चाहे वह तेंदुपत्ता हो, इमली, गिलोय या लाख या फिर कोसा ही क्यों न हो। यहाँ की वन सम्पदा में इमली का भी बड़ा महत्व है।

इमली : इमली Termarind पादप कुल फैबिया का एक वृक्ष है। इसके फल लाल व भूरे रंग के होते हैं तथा स्वाद में बहुत खट्टे होते हैं। इमली का वृक्ष समय के साथ बहुत बड़ा हो सकता है और इसकी पत्तियाँ एक वृन्त के दोनों तरफ छोटी-छोटी लगी होती हैं।

गर्मियों की रानी : खट्टी-मीठी इमली के फायदे : चटकारेदार और मुँह में पानी लाने वाली इमली, स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होती है। इसलिए इसे विशेष तौर से भोजन में सम्मिलित किया जाता है।

दक्षिण भारत में दालों में रोजाना कुछ खट्टा डाला जाता है, ताकि वह सुपाच्य हो जाए, इसलिए आंध्रवासी भी

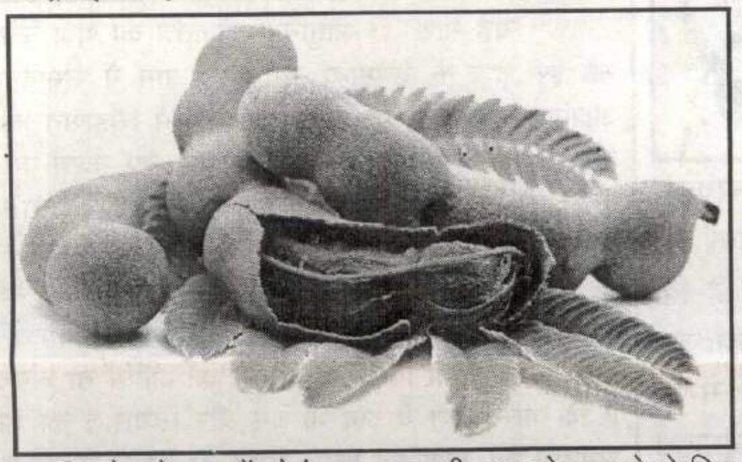

इमली के भोजन में बेइंतहा इस्तेमाल करते हैं। दोषपूर्ण पानी से हड्डियाँ टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि वहाँ पीने के पानी में फ्लोराइड अधिक मात्रा में मौजूद है, इमली इस फ्लोराइड से क्रिया कर, शरीर में इसका अवशोषण रोक देती है।

कच्ची इमली बच्चों को बड़ी प्रिय होती है। इमली के उपयोग के अनेक तरीके हैं—गर्मियों में ताजगीदायक पेय बनाने के लिए इमली को पानी में कुछ देर के लिए भिगोएँ व मसलकर इसका पानी छान लें, अब इसमें स्वादानुसार गुड़ या शक्कर, नमक व भुना जीरा डाल लें। इसमें डाले गए ताजे पुदीने के पत्ते स्फूर्ति की अनुभूति बढ़ाते हैं। गर्मियों में इसके नियमित सेवन से लू की संभावना खत्म होती है। यह पेय हल्के विरेचक का काम भी करता है। साथ ही धूप में रहने से पैदा हुए सिर दर्द को भी दूर करता है। पकी इमली अपच को दूर कर, मुँह के स्वाद को ठीक करती है। यह क्षुधावर्धक भी है। इमली, पेट के कीड़ों से छुटकारा पाने के लिए भी उपयोगी है। इसके अलावा इसे हृदय का टॉनिक भी माना जाता है।

पित्त समस्याओं के लिए रोजाना रात को एक बेर के बराबर इमली को कुल्हड़ में भिगो दें। सुबह मलकर छान लें, थोड़ा मीठा डालकर खाली पेट पी जाएँ। छः सात दिन में लाभ नजर आने लगेगा।

इसके अलावा इमली की पत्तियों का पेस्ट, सूजन के अलावा दाद पर भी लगाया जाता है। इसके फलों से भूख बढ़ने के अलावा व्यंजनों का स्वाद बढ़ता है। आयुर्वेद में इमली के बीजों के भी औषधीय उपयोग हैं। इसके बीजों का पाउडर, पानी में घोलकर बिच्छु के काटने वाली जगह पर लगाया जाता है। इमली के बीजों को रात भर पानी में भिगोकर, सुबह छील लें व पीठ दर्द के लिए खूब चबाकर खा लें।

इमली, ऊतकों में जमा यूरिक अम्ल निष्कासित करती, है, जिससे जोड़ों में दर्द व रयूमेटिज्म में आराम मिलता है। समाज में यह भ्रांति है कि इस तरह के रोगियों को इमली से पूर्ण परहेज करना चाहिए, क्योंकि इमली से जोड़ों में जकड़न बढ़ती है। तथ्य यह है कि जोड़ों से यूरिक अम्ल के निष्कासन के दौरान दर्द बढ़ जाता है, जिसका जिम्मेदार इमली को मान लिया जाता है। इमली के निरंतर सेवन से जोड़ों का दर्द दूर हो जाता है। आजकल ३० वर्ष की उम्र में ही लोग खासकर महिलाएँ, इस रोग से पीड़ित हो रही हैं, अतः इमली के निरंतर प्रयोग से इस रोग पर काबू पाया जा सकता है।

इमली का पुष्पकाल फरवरी से अप्रैल तथा फलकाल नवम्बर से जनवरी तक आता है। इसके फल में शर्करा, टार्टरिक अम्ल, पेक्टिन, ऑक्जेलिक अम्ल तथा मौलिक अम्ल आदि तथा बीज में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट तथा खनिज लवण प्राप्त होते हैं। यह कैल्शियम, लौह तत्व, विटामिन बी, सी तथा फॉस्फोरस का अच्छा स्रोत है।

टार्टरिक अम्ल : कार्बनिक यौगिक होता है, जो नैचुरली हर पौधों में होता है।

पेक्टिन : जो जैम, जेली को सुरक्षित रखने के लिए या बनाने के लिए प्रयोग होता है।

ऑक्जेलिक अम्ल : ऑक्जेलिक अम्ल पोटेशियम और कैल्शियम लवण के रूप में बहुत पौधों में पाया जाता है।

प्रोटीन : कार्बनिक पदार्थ है, जिसका संगठन कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन और नाइट्रोजन तत्वों के अणुओं से मिलकर बना है।

वसा : यानी चिकनाई, शरीर को क्रियाशील बनाए रखने में मदद करती है।

कार्बोहाइड्रेट : कार्बनिक पदार्थ है, जिसमें कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन होते हैं।

खनिज लवण : इसको खून साफ करने वाला भोजन भी कहते हैं। इसमें लैक्टिक और ट्राटेट लवण पाया जाता है।

कैल्शियम : ये हड्डियों का रस होता है। ये हमारी हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है।

आयरन (लौह) : मनुष्यों के शरीर में बहुत ही कम मात्रा में पाया जाता है, ये पूरे शरीर के वजन का १ से २५००० वाँ भाग होता है। आयरन वो तत्व होता है, जो मांसपेशियों में जीवन-दायिनी ऑक्सीजन गैस पहुँचाकर, कार्बन डाइऑक्साइड गैस को शरीर से बाहर निकालता है।

आयोडीन : ये सब्जियों और फलों के छिलकों के नीचे के हिस्सों और शेष पृष्ठ 11 पर

आपका आरोग्य कवच—योगासन

मानवमात्र के हित के लिए भारत के ऋषि-मुनि मन्त्र विज्ञान, आयुर्वेद, योग तथा प्राणायाम इत्यादि-इत्यादि के रूप में में हमारे लिए इतनी समृद्ध विरासत छोड़ गए हैं कि आज का मनुष्य जब

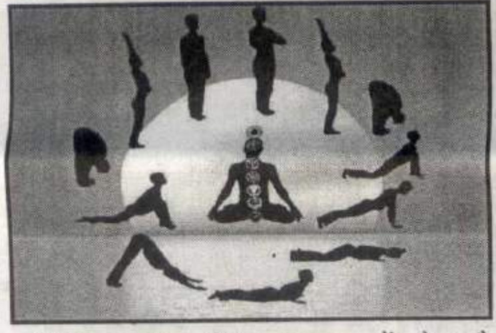

इन्हें विज्ञान की कसौटी पर कस कर देखता है तो उसके मुँह से बरबस ही निकलता है—अद्भुत, आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय। शरीर की रक्षा हेतु 'योगासन' भी हमें हमारे ऋषियों द्वारा विरासत में मिला ऐसा ही एक बहुमूल्य खजाना है। हम इस अंक से आप के लिए कुछ बहुत ही सरल एवं लाभदाय आसनों का विवरण देना प्रारम्भ कर रहे हैं, जिन्हें आप आसानी से आप अपने घर पर भी कर सकते हैं।

आसनों की प्रक्रिया में आने वाले कुछ शब्दों का अर्थ—रेचक : श्वास छोड़ना, पूरक : श्वास भीतर लेना, कुम्भक : श्वास को भीतर या बाहर रोकना। मानव शरीर में स्थित सात शक्ति केन्द्रों अथवा चक्रों के स्थान इस प्रकार हैं—मूलाधार : गुदा के पास मेरुदण्ड के आखिरी मनके के पास होता है, स्वाधिष्ठान : जननेन्द्रिय से ऊपर और नाभि से नीचे के भाग में होता है, मणिपुर : नाभिकेंद्र में होता है, अनाहत : हृदय में होता है, विशुद्ध : कण्ठ में होता है, आज्ञाचक्र : दो भौहों के बीच में होता है, सहस्रार : मस्तिष्क के ऊपर के भाग में जहाँ चोटी रखी जाती है, वहाँ होता है।

इस आसन में मयूर अर्थात मोर की आकृति बनती है, इसलिए इसे मयूरासन कहा जाता है।

ध्यान : मणिपुर चक्र में।

श्वास : ब्रह्मा कुम्भक।

विधि : जमीन पर घुटने टिकाकर बैठ जाएँ। दोनों हाथों की हथेलियों को जमीन पर इस प्रकार रखें कि सब अंगुलियाँ पैर की दिशा में हों और परस्पर लगी रहें। दोनों कुहनियों को मोड़कर पेट के कोमल भाग पर, नाभि के इर्द-गिर्द रखें। अब आगे झुककर दोनों पैरों को पीछे की ओर लम्बे करें। श्वास बाहर निकालकर दोनों पैरों को जमीन से ऊपर उठायें और सर का भाग नीचे झुकायें। इस प्रकार शरीर जमीन से समानान्तर रहे ऐसी स्थिति बनायें। सम्पूर्ण शरीर का वजन केवल दो हथेलिया पर ही रहेगा। जितना समय रह सकें उतना समय इस स्थिति में रहकर फिर मूल स्थिति में आ जायें। इस प्रकार दो-तीन बार करें।

लाभ : मयूरासन करने से ब्रह्मचर्य-पालन में सहायता मिलती है। पाचनतंत्र के अंगों की ओर रक्त का प्रवाह अधिक बढ़ने से वे अंग बलवान और कार्यशील बनते हैं। पेट के भीतर के भागों में दबाव पड़ने से उनकी शक्ति भी बढ़ती है। उदर के अंगों की शिथिलता और मंदाग्नि दूर करने में मयूरासन बहुत उपयोगी है।

ग्लोबल वार्मिंग जलवायु परिवर्तन

रश्मि अग्रवाल, नजीबाबाद, बिजनौर

पर्यावरणीय समृद्धि की चाहत, या उपभोगवादी चीन और अमेरिका जैसा बनने की चाहत, क्यों? ये प्रश्न भारत स्वयं से करें? कि विकास की इस अंधी दौड़ में क्या खोना व क्या पाना चाहते हैं? पहले ये सुनिश्चित करें। क्योंकि विकास की चाहत में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता जितनी घटती जायेगी, विकास के पैमाने प्राप्त करने की चीख–पुकार उतनी ही बढ़ती जायेगी। अतः चाहे नमामी गंगे का संकल्प हो, स्वच्छ भारत, डिजीटल इंडिया, वनों की रक्षा या प्राकृतिक संरचना का वास्तविक रूप–स्वरूप, सभी का परम्परागत ढाँचा चरमरा जायेगा।

आज पर्यावरण एक विशेष व ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है क्योंकि आज के मशीनीयुग में हम ऐसी स्थिति से गुजर रहे हैं, जहाँ प्रदूषण अभिशाप के रूप में चुनौती बना हम सभी के समक्ष खड़ा हुआ है। एक ओर जहाँ विज्ञान एवं तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में नए–नए अविष्कार हो रहे हैं, तो दूसरी ओर मानव परिवेश भी उसी गति से प्रभावित हो रहा है।

देखा जाए तो मानव की आम वृति होती है कि जब तक वह किसी चीज को प्रत्यक्ष रूप से देख–सुन व जान–समझ नहीं लेता, तब तक उस पर विश्वास नहीं करता। उदाहरण के लिए कुछ ही समय पूर्व अनेक परिवर्तन गिनाए जा सकते हैं, जैसे–दूर संचार क्रांति, बैंक कार्यों में बढ़ोतरी आदि को पहले बताने में अजूबा समझते थे पर आज जब इन बदलावों को वे भौतिक रूप से यर्थाथ रूप में अनुभव कर रहे हों तो विश्वास के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचता। यही बात पृथ्वी के संकट यानि बढ़ता तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) की करें, तो जो लोग इस नुकसान को सिरे से नक्कारते थे, आज उसको बचाने की पहल की अगुवाई करते नजर आ रहे हैं। विस्तृत रूप से समझें तो मौसम और जलवायु में परिवर्तन के साक्ष्य दिखने लगे हैं। जैसे–वर्षा की पद्धति में परिवर्तन के चलते गम्भीर बाढ़, सूखा, तेज बारिश, यदा–कदा लू चलने की प्रवृत्ति दिखने लगी। महासागर गर्म होकर अधिक अम्लीय हो रहे हैं, हिमाच्छादित चोटियाँ और ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र तल बढ़ रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि हालिया वायुमंडल के बढ़ते तापमान को भू–गर्भीय गतिविधियों के परिवर्तन के साथ जोड़ा जा सकता है। इससे धरती पर जारी दबाव बढ़ रहा है, जैसे–जैसे ग्लोबल वार्मिंग की गति तेज हो रही है, प्राकृतिक आपदाओं में भी बढ़ोतरी हो रही है।

ग्लोबल वार्मिंग : ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ पृथ्वी की निकटस्थ –सतह वायु और महासागर के औसत तापमान में २०वीं शताब्दी से हो रही वृद्धि और अनुमानित निरंतरता है।

मानव पूर्व जलवायु की भिन्नता : पृथ्वी ने पूर्व में भी कई बार गर्मी और सर्दी अनुभव की है। आरंभिक 'जुरासिक काल' के (लगभग १८० करोड़ वर्ष पूर्व) में ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि होने के कारण औसत तापमान ५ डिग्री सेल्सियस (९ डिग्री) तक बढ़ गए।

व्यापक चर्चा करें तो अंतर्राष्ट्रीय 'संस्था आईपीसीसी' के अध्ययन के अनुसार पिछली सदी के अंतर्गत धरती का औसत तापमान १.४ फॉरेनहाइट बढ़ चुका है। (इसमें घटत–बढ़त होती रहती है।) अगले १०० वर्षों के अंतर्गत इसके बढ़कर २ से ११.५ फॉरेनहाइट होने का अनुमान है। इस प्रकार धरती धीरे–धीरे गर्म हो रही है। तापमान में यह वृद्धि ग्रह की जलवायु और प्रणाली में व्यापक रूप से विनाशकारी परिवर्तन ला सकती है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण अधिक जनसंख्या वाले विश्व के शीर्ष पाँच फीसद शहरों का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। इस शहरों के औसत तापमान में सदी के अंत तक यानि २१०० तक अनुमानित आठ डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। यह आँकड़ा नीदरलैंड के 'इस्टीट्यूट फॉर इनवायरमेंट स्टडीज' के शोधकर्ताओं ने २०१७ में ताजा शोध के अनुसार, ऐसा शहरी निर्माण में बढ़ते कॅक्रीट के प्रयोग के कारण होगा कहा है। 'नेचर क्लाइमेट चेंज' नामक जर्नल में प्रकाशित शोध के अनुसार यह 'पेरिस जलवायु समझौते' के लक्ष्य को पूर्ण करने की दिशा में बड़ी चुनौती साबित होगा।

अन्य कारण : शहरी निर्माण में प्रयोग कंक्रीट, बाँधों, झीलों के स्थान पर भव्य इमारतें, डामर का प्रयोग, के कारण भी होते हैं। इसे 'अर्बन हीट आईलैंड इफेक्ट' कहते हैं। ये सौर विकिरणों को सोखते हैं। जिसमें धरती की सतह तेजी से गर्म होती है।

शहर भी खतरनाक : भले ही शहर पृथ्वी के एक फीसद भाग में बसे हों पर विश्व में प्रयोग होने वाले उत्पादों में से ८० फीसद यहीं बनाए जाते हैं। इसी कारण कुल वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में इन शहरों की हिस्सेदारी ६० फीसद है।

खतरे और भी : यदि धरती का औसत तापमान एक या दो डिग्री हो जाए तो होने वाले गंभीर परिणामों को नक्कारा नहीं जा सकता। (एक डिग्री सेल्सियस तापक्रम ३३.८ डिग्री के बराबर होता है।)

'इंटरनेशनल यूनियन फॉर कॅन्सर्वेशन फॉर नेचर' ने एक रिपोर्ट जारी की है। इसके अनुसार २० वीं सदी से अब तक ग्रीन हाउस गैसों का जितना भी उत्सर्जन हुआ उसकी ९० फीसदी गर्मी समुद्र में समा गई। इसके परिणामस्वरूप समुद्र का आकार बढ़ रहा है, ये ही नहीं खतरे की घण्टी इस प्रकार भी बज सकती है, जैसे–

- तूफान और चक्रवात होंगे और शक्तिशाली, इससे हो सकती है भारी तबाही।
- रफ्तार से पिघलेंगे ग्लेशियर। मीठे पानी की कमी व पर्यावरण में होगा परिवर्तन, विलुप्त हो शेष पृष्ठ 11 पर

---

३ जून १९४७

यह दिवस, काला दिन है क्योंकि इसी दिन, इंग्लैन्ड की पार्लियामेन्ट ने, परतन्त्र भारत को स्वतन्त्र करने के लिए, कानून बनाया था जिसकी मुख्य बातें इस प्रकार हैं:–

१. भारत को विभाजित करके, पश्चिम तथा पूर्व में, पाकिस्तान नाम का नया देश ३० जून १९४८ से पहले, बनाकर, फिर दोनों देशों को, स्वतन्त्रता दे दी जाएगी।

२. अविभाजित भारत का क्षेत्रफल तेरह लाख वर्गमील था जिसमें ५६९ रियासतें थीं। उन्हें अधिकार दिया गया कि वे किसी एक देश में, विलीन हो जाएं अथवा स्वतन्त्र देश बन जाएं।

३. ७ रियासतें, पश्चिमी पाकिस्तान में, विलीन हो गई।

४. शेष ५६२ रियासतों को भारत में विलीन करने की जिम्मेदारी, कांग्रेस ने लौह पुरुष सरदार पटेल को सौंपी।

५. सरदार पटेल ने, बहुत कुशलता से ५६१ रियासतों का विलय भारत में कराया जिसका विवरण इस प्रकार है, १५ अगस्त १९४७ से पहले ५५७, १९४८ में ००२, १९४९ में ००२, **नोट इनके विलय पर कोई विवाद नहीं है।**

६. जम्मू–कश्मीर सबसे बड़ी रियासत थी। अंग्रेजों ने बालटिस्तान और गिलगित के क्षेत्रों को १३ अगस्त १९४७ को महाराजा हरी सिह को सौंप दिया था। इस प्रकार रियासत के ५ भाग हो गए थे जिनमें कश्मीर घाटी का क्षेत्रफल सबसे छोटा है।

७. चतुर–कट्टर मुस्लिम नेता, शेख अब्दुल्ला रियासत के, भारत में विलीन होने पर राज्य के मुख्यमंत्री बनना चाहते थे जो पटेल के कारण कतई सम्भव नहीं था।'

८. उन्होंने नेहरू से कहा कि वे विलय का कार्य पटेल से लेकर स्वयं करें। विलय होने पर उन्हें मुख्यमंत्री बना दें क्योंकि मुस्लिमों में उनका प्रभाव है।

९. प्रधानमंत्री होने के नाते, पटेल को, विलय की जिम्मेदारी मजबूरी में, नेहरू को देनी पड़ी। अदूरदर्शी–उदारता–तुष्टीकरणवादी होने का पूरा लाभ शेख अब्दुल्ला ने उठाया और अक्तूबर १९४७ में हुए विलय को विवादास्पद बना दिया। अब वहां आतंकवाद चल रहा है। आधा राज्य पाकिस्तान और चीन के अवैध कब्जे में है। घाटी का माहौल चाहे जब आसामान्य हो जाता है।

१०. १०० प्रतिशत मुस्लिमों को, पाकिस्तान जाना था किन्तु गांधी–नेहरू ने एक तिहाई मुस्लिमों को, पाकिस्तान नहीं भेजकर भयंकर गलती की। १९५१ में मुस्लिम १० प्रतिशत थे जबकि अब १७ प्रतिशत हो गए हैं। इस प्रकार गांधी–नेहरू असफल रहे हैं फिर भी मुर्दा हिन्दू अभी भी कांग्रेस के साथ है। क्यों?

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

भारत विरोधियों का दु:साहस

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

भारत को बदनाम करके कमजोर करने वाला विशेष वर्ग ऐसे विभिन्न प्रकार के झूठे व मिथ्या आरोप लगाने का विशेषज्ञ है। अमरीका की प्रसिद्ध टाइम पत्रिका में पाकिस्तानी कट्टरपंथी राजनीतिज्ञ दिवंगत सलमान ताशीर व भारत की वरिष्ठ पत्रकार सुश्री तवलीन सिंह के पुत्र आतिश ताशीर के श्री नरेन्द्र मोदी के विषय में लिखे लेख के शीर्षक इंडियाज डिवाइडर इन चीफ से ही यह ज्ञात होता है कि लिखने वाला भारत विरोधी पूर्वाग्रहों से ही ग्रस्त है। उन्हें वर्तमान भारत का कोई ज्ञान नहीं। वह पाकिस्तान की जन्मजात भारत विरोधी शत्रु मानसिकता से बाहर निकलने की मनस्थिति में नहीं है।

श्री नरेंद्र मोदी को भारत का मुख्य विभाजक बता कर लेखक किसको मूर्ख बनाना चाहता है? भारत भक्तों को यह भली प्रकार समझ में आ गया है कि मोदी जी के सशक्त प्रशासकीय कार्यकुशलता के परिणामों से भारत का खोया हुआ सम्मान आज विश्व में पुनः स्थापित हो रहा है। हो सकता है कि लेखक अपने इस कटुतापूर्ण लेख के माध्यम से भारत के साथ साथ शेष विश्व में मोदी जी को हिन्दुओं का मोहम्मद अली जिन्नाह, ओसामा बिन लादेन या बगदादी जैसा अत्याचारी बताने का दुःसाहस कर रहा हो। लेकिन आधुनिक काल में मुगलकालीन अत्याचारी व्यवस्था के समान कोई व्यवस्था को सभ्य समाज क्यों कर स्वीकार करेगा? क्या इस लेख से लोकतंत्र में बहुमत से विजयी हुए श्री नरेंद्र मोदी जी को देश की सत्ता सौपने वाले भारतीयों का लेखक द्वारा अपमान किया जाना उचित है?

श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार की मई २०१४ से मई २०१६ तक लगभग ५ वर्षों की अवधि में जम्मू-कश्मीर व पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त देश के किसी भी अन्य क्षेत्र में साम्प्रदायिक हिंसा व आतंकवादी घटनाएं नहीं हुई। जबकि मुस्लिम बहुल जम्मू-कश्मीर में हिंदुओं और भारतीय सुरक्षाबलों पर ही अत्याचार होता आ रहा है। वहीं पश्चिम बंगाल में भी मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में ही हिन्दुओं का ही उत्पीडन हुआ है। लेकिन स्वतंत्र भारत के इस एतिहासिक सत्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि साम्प्रदायिक दंगे अधिकांश मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में ही मुसलमानों द्वारा ही करवाये जाते रहे हैं।

वर्तमान सरकार ने सबका साथ व सबका विकास करने की नीति पर कार्य किया है। समस्त देशवासियों के साथ एक समान व्यवहार हुआ। भेदभाव पूर्ण कोई नियम व कानून नही बनें। ऐसे में मोदी जी को विषाक्त धार्मिक राष्ट्रवाद फैलाने वाले के रूप में प्रस्तुत करना झूठ की पराकष्ठा व पत्रकारिता का भयावह रूप है। जबकि सोनियानीत पिछली सप्रंग सरकार ने बहुसंख्यकों हिन्दुओं के विरुद्ध व भारत से भारतीयता को मिटाने के लिये २०११ में एक भयानक अमानवीय व असंवैधानिक सांप्रदायिक लक्षित हिंसा निरोधक अधिनियम बनाने का कुप्रयास किया था। उस प्रस्तावित अधिनियम के प्रारूप को शायद इस मुस्लिम कट्टरपंथी लेखक ने समझने का प्रयास ही न किया हो। क्योंकि उसमें भारत विरोधियों की विजय का संकेत था।

यहां यह भी कहना उचित ही है कि अल्पसंख्यकों को अनेक योजनाओं द्वारा पूर्व सरकारों की तुलना में मोदी सरकार ने अधिक लाभान्वित किया है। मुस्लिम समाज के विशेष सशक्तिकरण के प्रयास किये गए हैं। भारतीय प्रशासनिक व अन्य सरकारी सेवाओं में मुस्लिम समाज की भागीदारी कई गुना बढ़ी है।

इडियास डिवाइडर इन चीफ नाम के शीर्षक से प्रकाशित लगभग ३० पृष्ठों के लेख का सम्भवतः टाइम पत्रिका के विद्वान संपादक ने अध्ययन ही न करा हो और भारत में हो रहें लोकसभा चुनावों के मध्य ही मोदी जी को अपमानित करने की शीघ्रता में ऐसा किया गया हो। इस लेख की सत्यता को जानें बिना इसको प्रकाशित करवाने के पीछे वह वर्ग भी प्रयासरत होगा जिनका उन लगभग बीस हजार एन.जी.ओ. से संबंध हो और जिनको भारत विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाये जाने के कारण मोदी सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया है।

भारत के टुकड़े-टुकड़े करके विभाजित व बर्बाद करने की दुर्भावना से ग्रस्त षडयंत्रकारियों को विफल करने में मोदी सरकार का कुशल प्रशासन सराहनीय है। भारत के शत्रुओं को सर्जिकल व एयर स्ट्राइक द्वारा नष्ट करने के अभियानों से श्री नरेन्द्र मोदी जी के साहसिक निर्णयों का सम्पूर्ण जगत में अभूतपूर्व स्वागत हुआ है। लेखक व प्रकाशक को पुनः विचार करना चाहिये कि अगर श्री नरेन्द्र मोदी जी कुछ भी अमानवीय कार्य या भारतवासियों के विरुद्ध कार्य करते तो क्या अनेक राष्ट्रों द्वारा (जिनमें कुछ मुस्लिम राष्ट्र भी है) उन शेष पृष्ठ 11 पर

आजादी का अर्थ

✍ रामरूप त्रिवेदी

माना एक दासता से हम मुक्त हुये आजाद हुये।
लेकिन मानव मूल्यों से हम निश्चय ही बर्बाद हुये।।
जाति धर्म भाषा जैसे वादों से हम भरपूर हुये।
मानवता आदर्श और नैतिकता से हम दूर हुये।।

आजादी का अर्थ नहीं है मनमानी हम करें यहाँ।
जैसे भी हो एक मात्र बस अपना घर हम भरें यहाँ।।
आजादी का अर्थ नहीं हम औरों को भयभीत करें।
और अराजकता फैलाकर औरों की सुख शान्ति हरे।।

आजादी का अर्थ नहीं हम कही न शिष्टाचार करें।
मानवता से घृणा और दानवता से हम प्यार करें।।
आजादी का अर्थ नहीं संकीर्णता पर विश्वास करें।
जाति धर्म पर देश बाँटने का दिनरात प्रयास करें।

आजादी का अर्थ नहीं हम सुख अपनों में रमा करें।
धन स्वदेश का चोरी स्वीस बैंक में जमा करें।।
आजादी का अर्थ नहीं हम खुलकर भ्रष्टाचार करें।
स्वार्थ पूर्ति कि लिये किसी भी सीमा को हम पार करें।।

आजादी का अर्थ नहीं हम छीनें औरों के अधिकार।
स्वार्थ हेतु हम करें और से पल पल हिंसा का व्यवहार।।
आजादी का अर्थ नहीं हम औरों को तो दे उपदेश।
किन्तु स्वयं निज आचरणों से पहुचायें जन जन को क्लेश।।

आजादी का अर्थ नहीं आजादी का उपभोग करें।
स्वर्थ हेतु हम पल पल इसका अनुचित उचित प्रयोग करें।।
आजादी का अर्थ नहीं है ऐसी भूख बढ़ायें हम।
लोहा ईंट और पशुओं का चारा तक खा जाये हम।।

आजादी का अर्थ नहीं हम उनको ही विस्मृत कर दें।
उनकी पावन स्मृति को हम धूमिल कर दें, मृत कर दें।।
फाँसी के फन्दे पर जिनकी झूल गई तरूणायी है।
जिनके बलिदानों से हमने यह आजादी पाई है।।

आजादी का अर्थ एक, हम सबसे प्रेमाचरण करें।
जाति धर्म से परे और की पीड़ का हम हरण करें।।
आजादी का अर्थ एक, हम सब निशि-दिन भय मुक्त रहें।
सुख दुख में हम एक दूसरे से पल पल संयुक्त रहें।।

आजादी का अर्थ एक है, नहीं किसी का शोषण हो।
सबको शिक्षा, सबको रोटी, सबका समुचित पोषण हो।।
आजादी का अर्थ यही, हो सबको जीने का अधिकार।
सबको सबकी चिन्ता हो सब करें परस्पर सद्व्यवहार।।

तन, मन धन से मातृभूमि का हम सुन्दर श्रृंगार करें।
हमने ऐसा नहीं किया तो फिर अनर्थ हो सकता है।
अमर शहीदों का सारा बलिदान व्यर्थ हो सकता है।।

आतंकी तत्त्वों से यह सहानुभूति क्यों?

✍ सुरेन्द्र किशोर

हाल में दिल्ली के जाफराबाद और उत्तर प्रदेश के अमरोहा से एनआइए ने एक मौलवी और इंजीनियरिंग छात्र सहित १० लोगों को देश के खिलाफ आतंकी साजिश रचने के लिए गिरफ्तार किया। उनकी योजना देश को दहलाने और कुछ हस्तियों को नुकसान पहुँचाने की थी। बताया जा रहा है कि ये लोग आइएस से प्रेरित थे। हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि अतीत में प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिमी के साथ इस देश के कुछ दलों और नेताओं का स्नेह–समर्थन का सम्बन्ध रहा है। सम्भवतः ऐसी 'उर्वर भूमि' देख–सुनकर ही आइएस प्रमुख अबू बकर अल बगदादी के समर्थकों ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी हो। नतीजतन यह मामला सामने आया। पता नहीं, इस देश में अभी और कहाँ–कहाँ अमरोहा या जाफराबाद पल रहा है। देखा जाये, तो सिमी खलीफा के शासन का पक्षधर था और आइएस भी। १६७७ में अलीगढ़ में गठित छात्र संगठन सिमी साफ–साफ कहता रहा कि हम हथियारों के बल पर इस देश में इस्लामिक शासन कायम करना चाहते हैं। स्थापना के समय सिमी का सम्बन्ध जमात–ए–इस्लामी से था; लेकिन उसने जब इस्लाम के जरिये भारत की मुक्ति का नारा दिया, तो १६८६ में जमात–ए–इस्लामी ने सिमी से अपना नाता तोड़ लिया। इसके बावजूद कुछ तथाकथित सेक्युलर दलों के बड़े नेतागण उसे छात्रों का निर्दोष संगठन बताने लगे। जब उस पर २००१ में प्रतिबंध लगा, तो कांग्रेसी नेता सलमान खुर्शीद सिमी के बचाव में सुप्रीम कोर्ट में खड़े हो गए। खुर्शीद उस समय उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे। इसके अलावा बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के कई बड़े नेताओं ने भी खुलेआम सिमी का बचाव करते हुए कहा कि सिमी एक निर्दोष संगठन है।

२००८ में दिल्ली हाईकोर्ट के ट्रिब्यूनल ने सिमी पर लगे प्रतिबंध को समाप्त कर दिया तो सपा नेता मुलायम सिंह यादव और राजद नेता लालू प्रसाद ने ट्रिब्यूनल के निर्णय का स्वागत किया, लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट ने ट्रिब्यूनल के निर्णय को रद्द कर दिया। इसके बाद भी लालू प्रसाद ने प्रतिबन्ध हटाने की वकालत की। मुलायम सिंह ने इसी तरह की माँग करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में सिमी ने कोई आतंकी कार्यवाही नहीं की, पर सिमी की हिंसक और देशद्रोही करतूतों को ध्यान में रखते हुए पूर्ववर्ती केन्द्र सरकारों ने सिमी पर से प्रतिबन्ध नहीं हटाया। चूँकि हमारे यहाँ आतंकियों का खुलेआम समर्थन करने वालों के लिए किसी तरह की सजा का प्रावधान नहीं है इसलिए भी उन लोगों ने अपना 'काम' जारी रखा है। यशवन्त सिन्हा और अरुण शौरी के नेतृत्व में भाजपा का एक शिष्टमंडल १६ अगस्त, २००८ को चुनाव आयोग दफ्तर गया। शिष्टमंडल ने आयोग से माँग की कि सिमी जैसे

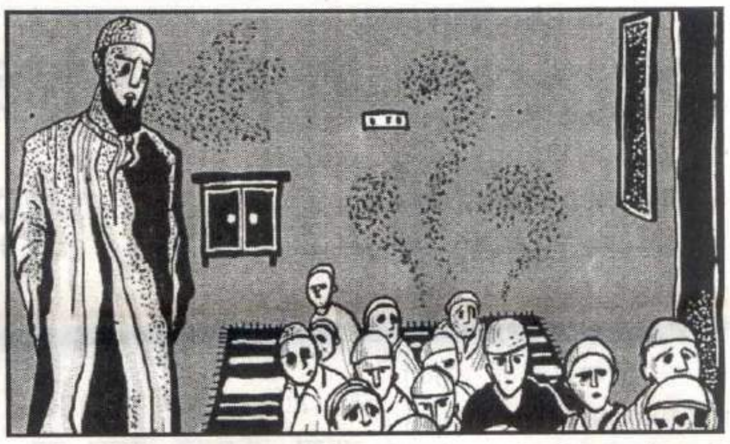

चरमपन्थी संगठन का पक्ष लेने वाले राजनीतिक दलों की मान्यता खत्म की जाए, परन्तु यशवन्त सिन्हा और अरुण शौरी जैसे नेता आज चुप हैं; क्योंकि अब वे भाजपा में नहीं हैं।

इस देश में पार्टी बदल जाने पर देश की रक्षा के प्रति नेताओं की गम्भीरता में भी फर्क आ जाता है। सिमी की पत्रिका 'इस्लामिक मूवमेंट' (सितम्बर, १६६६) के सम्पादकीय ने सेक्युलर लोकतंत्र के बजाय जिहाद और शहादत की अपील की थी। सिमी 'अहमदाबाद' के जोनल सेक्रेटरी साजिद मंसूरी ने एक अंग्रेजी अखबार (३० सितम्बर, २००१) से कहा था कि 'जब भी हम सत्ता में आएँगे, मन्दिरों को नष्ट कर देंगे और वहाँ मस्जिद बनाएँगे।' इसी तरह 'सिमी–संघर्ष यात्रा के २५ वर्ष' नामक पुस्तिका में सिमी ने लिखा था कि 'राष्ट्रवाद खिलाफत में सबसे बड़ी बाधा है।' सिमी के बिहार जोन के सचिव रियाजुल मुसाहिल ने २० सितम्बर, २००१ को कहा था कि 'कुरान हमारा संविधान है। हम भारतीय संविधान से बँधे हुए नहीं हैं। हम भारत चाहते हैं।' अहमदाबाद धमाकों के बाद पकड़े गए सिमी सदस्य अबुल बशर ने बताया था कि 'सिमी की इस नीति से प्रभावित हूँ कि लोकतांत्रिक तरीके से इस्लामिक शासन सम्भव नहीं है। उसके लिए एकमात्र रास्ता जिहाद है।' इसके बावजूद कांग्रेसी नेता डॉ. शकील अहमद ने कहा था कि गुजरात दंगे के विरोध स्वरूप इण्डियन मुजाहिदीन (आइएम) का गठन हुआ। जबकि हकीकत यह है कि अनेक हिंसक कारनामों की खबरों के बीच २००१ में जब केन्द्र सरकार ने सिमी पर प्रतिबंध लगाया, तो सिमी के नेताओं ने २००२ में इण्डियन मुजाहिदीन बना लिया। २००२ के गुजरात दंगे से बहुत पहले सिमी ऐलान कर चुका था कि हमारा उद्देश्य हथियार के बल पर भारत में इस्लामिक शासन कायम करने का है। हमारे आदर्श ओसामा बिन लादेन हैं। माना जाता है आइएम के मोस्ट वाण्टेड आतंकी अब्दुल सुभान कुरैशी उर्फ लादेन और उसके साथियों ने पाकिस्तान के पैसे के बल पर ही इण्डियन मुजाहिदीन शेष पृष्ठ 10 पर

सभी के सहयोग से ही आतंकवाद समाप्त होगा

१४ फरवरी २०१६ को कश्मीर घाटी के पुलवामा में भारतीय सुरक्षाबलों पर आत्मघाती हमले में लगभग ४५ से अधिक वीर जवानों का बलिदान हो गया। पूरे राष्ट्र में शोक छा गया तथा जवानों को जगह–जगह शोक सभाओं का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी गई। मातृभूमि की रक्षा में अपने जीवन का न्यौछावर करने वाले बलिदानियों के परिजनों की पीड़ा में हम सभी उनके साथ हैं। उन्होंने देश की सुरक्षा में अपना बलिदान किया। अतः हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके वृद्ध माता–पिता, पत्नी, बच्चों, भाई–बहिनों की शिक्षा एवं जीवन निर्वाह की पूरी व्यवस्था करें।

भारतीय वायुसेना के अदम्य शौर्य को कोटि–कोटि वंदन एवं प्रणाम : भारत ने एक बार फिर पाकिस्तान की आतंकी हिमाकत पर २६ फरवरी २०१६ को तगड़ा प्रहार किया है। भारतीय वायुसेना के मिराज विमानों ने नियंत्रण रेखा के पास जाकर जबरदस्त स्ट्राइक को अंजाम देते हुए जैश–ए–मोहम्मद (जो कि पुलवामा और पठानकोट समेत कई हमलों का जिम्मेदार है) के आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया। हमारी वायुसेना ने एकदम सटीक संतुलित आंकलन किया और नियंत्रित हमले से अपना उद्देश्य पूरा किया। अभी तक पाकिस्तान ऐसे अड्डों को खत्म करने का दिखावा करने के साथ यह बहाना ही करता रहा कि हम तो खुद आतंक के शिकार हैं, किंतु पाकिस्तान बेशर्मी से बाज नहीं आता है। पुलवामा के बाद पाकिस्तान की बहानेबाजी को देखते हुए यह आवश्यक हो गया था कि उसे ना केवल सबक सिखाया जाए बल्कि यह संदेश दिया जाए भारत उसकी चालबाजी में आने वाला नहीं है। इस स्ट्राइक में ३०० से ज्यादा आतंकियों को मारने की बात कही जा रही है, परंतु इस ऑपरेशन के दौरान यह सावधानी भी रखी गई कि कोई भी नागरिक नहीं मरे। अब उसे यह भय सता रहा है कि उसकी ओर से भारत के खिलाफ कोई कदम उठाया गया तो उसे कहीं अधिक करारा जवाब मिलेगा।

अब पाकिस्तान इस भारतीय कार्यवाही का जवाब देने के लिए कसमसा रहा है। लेकिन कोई कदम जल्दबाजी में नहीं उठा सकता और ना ही वैश्विक समुदाय के गुस्से को आमंत्रित कर सकता है। भारत में एयर स्ट्राइक के बाद से देश भर में जश्न का माहौल है। हालांकि पिछली बार सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक के वक्त कुछ संदेह और आलोचना के स्वर उठे थे, लेकिन इस बार सरकार के आलोचकों और राजनैतिक विरोधियों ने भी न सिर्फ हमले की बात को शेष पृष्ठ 10 पर

क्या पाकिस्तान रूपी समस्या का कोई समाधान है?

✍ राजवीर आर्य

किसी भी देश के लिए कोई समस्या पैदा होती है उसके पीछे दो प्रमुख कारण होते हैं। प्रथम तो राजनेताओं की सोच दूसरा विभिन्न प्रकार के मत–मतान्तरों अर्थात् मजहब को धर्म समझना व मानना। जो राजनेता चाहे वह किसी भी दल से सम्बन्ध रखता है अपने नैतिक मूल्यों से ज्यादा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ, महत्वकांक्षा, यश व धन को महत्त्व देता है भले ही वह १०–२० वर्षों के लिए राज्य कर जाए लेकिन उसकी नीतियों व स्वार्थ परायणता का दंश सैकड़ों वर्षों तक झेलना पड़ता है। राजा राममोहन राय ने एक धर्म सभा स्थापित की उनका यह समाघोष था कि सब धर्म समान हैं या तो स्थापित करने वाले कि भूल थी या उन लोगों की नासमझी जो धर्म और मजहब के अन्तर को नहीं मानते हैं। धर्म का आधार ईश्वरीय ज्ञान पर आधारित है और मजहबों का आधार भिन्न–भिन्न महापुरुषों के अपने–अपने विचारों का एक संग्रह मात्र है। कुछ व्यक्तियों ने मजहब को धर्म घोषित कर मजहब के सब दुर्गुणों को धर्म के साथ जोड़ दिया है। इस प्रकार धर्म भी अधर्म हो गया और जो धर्म की स्थापना करना चाहते थे उनको घोर कष्टों, संघर्षों यहाँ तक अपने प्राणों को भी गंवाना पड़ा जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती इत्यादि। जब राजनीति में धर्म के स्थान पर मजहब घुस जाता है तो वह अपना रंग दिखाने लगता है और वह विचारधारा एक राष्ट्र मान कर उससे कल्पना रूपी राष्ट्र निर्माण के स्वप्न देख कर हमारे राजनेता आगे बढ़ते हैं। इस्लाम मजहब का उदय निर्माण के स्वप्न देख कर हमारे राजनेता आगे बढ़ते हैं। इस्लाम मजहब का उदय सातवीं शताब्दी में अरब देश में हुआ। अरब महाद्वीप उस समय बहुत पिछड़ा हुआ था और यहाँ पर यहूदी और ईसाई मजहब के लोग बसे हुए थे। इनके दो प्रमुख नगर थे एक मक्का और दूसरा मदीना। ये लोग आपस में कबीलों में बंटे हुए थे और एक–दूसरे से संघर्ष करते रहते थे। इसी एक कुरेश कबीले में मोहम्मद नामक युवक ने इस्लाम मजहब की नींव रखी और अपने आपको खुदा का पैगम्बर घोषित किया और उनके अनुयायी कहलाने लगे। इसके साथ–साथ उन्होंने यह घोषणा भी कि जो मुसलमान नहीं होगा वह काफिर होगा। अरबों की अपेक्षा मोहम्मद साहब का जीवन उत्तम था। अरब लोग २०–२० शादियाँ करते थे। मोहम्मद साहब ने ११ शादियाँ की लेकिन अपने अनुयायियोंके लिए चार विवाह करने की सीमा लगा दी। उस समय अरब देश में लड़कियों की संख्या ज्यादा होती थी। इसलिए बहुविवाह का यही कारण रहा होगा? अब सदा–सदा के लिए ऐसा हो जाएगा यह तो इस्लाम मत के संस्थापक ने भी नहीं सोचा होगा? आज के समय में यह कितना प्रासंगिक है आप सभी जानते हैं। बस इसी तरह के भेद होते हैं मजहब और धर्म के अन्दर। सन १६१६ तक हिन्दू और मुसलमान केवल एक राष्ट्र भारत की माँग अंग्रेजों से करते आ रहे थे। इसके पश्चात अलीगढ़ परम्परा अनुसार अंग्रेज राजनीतिज्ञ के सहयोग से मुसलमान अपना अलग राष्ट्र मान कर राजनीति करने लगे। मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसके नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने ब्रिटिश सरकार के सहयोग से अलग राष्ट्र स्थापित करने की व्यूह रचना कर डाली। इस कार्य के बहुत बड़े सहयोगी महात्मा गाँधी जी व पण्डित जवाहरलाल नेहरू रहे और इनके समर्थन के कारण इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के आगे हथियार डाल दिये। ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग के शीर्ष नेता का अलग राष्ट्र बनाने का मनोबल दिन–प्रतिदिन ऊँचा होता चला गया। यद्यपि उस समय के पंजाब के प्रधानमंत्री सिकन्दर हयात और दीनबन्धु छोटूराम जैसे नेताओं से जिन्ना अलग राष्ट्र की बात करने से बहुत डरता था लेकिन फिर भी वह १६४० में हुए लाहौर अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित करने में सफल हो गया कि "ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग के इस अधिवेशन का यह सुविचारित मत है कि कोई भी संवैधानिक योजना भारत में नहीं चल सकेगी और मुसलमानों को स्वीकार्य नहीं होगी जो कि निम्नलिखित बुनियादी सिद्धान्त पर आधारित ना हो। भौगोलिक दृष्टि से साथ लगे हुए इलाकों को इकट्ठा करके ऐसे क्षेत्र बनाए जाएँ जिनकी विभिन्न इकाईयाँ स्वशासित और प्रभुसत्तासम्पन्न हो।" जब इस प्रस्ताव का छोटूराम व अन्य उदारवादी मुस्लिम नेताओं को ज्ञात हुआ तो उन्होंने इसका घोर विरोध किया। दीनबन्धु छोटूराम से तो जिन्ना बहुत डरता था और स्पष्ट शब्दों में जिन्ना को चेतावनी दे दी गई कि अगर तू इस तरह से विष वमन करेगा तो तुझे पंजाब की भूमि पर पैर भी नहीं रखने दूँगा। तू भाई से भाई को लड़ाता है। उनकी इस निर्भीकता को देखकर ही बाद में लौह पुरुष सरदार पटेल को कहना पड़ा "यदि छोटूराम जिन्दा होते तो हमें पाकिस्तान रूपी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता।" जिन्ना अपने कार्य में सफल हुआ और १५ अगस्त १६४७ को देश आजाद होने के साथ–साथ पाकिस्तान का भी एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में गठन हो गया। जिसमें सिंध, बलूचिस्तान, उत्तर–पश्चिमी प्रान्त और पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी बंगाल को शेष भारत से काटकर पाकिस्तान नाम का एक नया देश बना दिया। उसी समय कश्मीर में भी युद्ध शुरू हो गया। माननीय श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने एक तिहाई कश्मीर रखकर शेष कश्मीर पाकिस्तान को दे दिया। खराब यहीं से हुआ ना तो पाकिस्तान के नेता अपना देश संभाल पाये और न ही हमारे नेता समझ पाये। परिणामस्वरूप १६७१ के युद्ध में बंगलादेश अलग देश बना और कश्मीर रूपी कोढ़ हम आज तक भुगत रहे हैं। यह तो उसी समय यह सारा ही भाग दे देना चाहिए था क्योंकि आप बड़े उदार बन बैठे थे या उसी समय समस्त कश्मीर को अपने आधीन करके अपने राष्ट्र का एक हिस्सा बना लेना चाहिए था जो कि उस समय सेना के लिए कोई कठिन कार्य नहीं था। नेहरू और गाँधी जी की उदारता ने हमारे देश के लिए गम्भीर समस्याएँ खड़ी कर दीं जिसका पुलवामा जैसी घटनाओं का परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं, मैं वहीं आ रहा हूँ जहाँ से यह लेख शुरू किया था। इसका समाधान तो यही है कि हमारे देश के नेता मजहब नीति को छोड़कर धर्मनीति को अपनायें तो पाकिस्तान या आतंकवाद हमारे लिए कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं है। हम निर्णायक कार्यवाही तभी कर सकते हैं जब इस समस्या के प्रति सारा राष्ट्र एक हो। हम एक–दूसरे से प्रमाण माँगने की सोच को बन्द करें कम से कम देश के हितार्थ कुछ त्याग भावना, समर्पण भाव और जो निर्दोष जवान व नागरिक मारे जा रहे हैं उनके प्रति ही हम संवेदना भाव रखें। डॉ. मोहम्मद इकबाल बहुत बड़े कवि हुए हैं। इनका मुस्लिम और हिंदू समाज पर बड़ा प्रभाव था क्योंकि ये राष्ट्रवादी विचारधारा रखते थे।

हिन्दी हैं हम वतन हैं
हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी यह
गुलिस्तां हमारा।।

लेकिन बाद में ये खिलाफत आन्दोलन से प्रभावित हो गये और कहने लगे–

"मुस्लिम हैं हम वतन हैं
सारा जहाँ हमारा"

यदि डॉ. इकबाल जैसे बुद्धिजीवी लोग भी अपनी सकारात्मक सोच रखते रहते तो भी इतनी गंभीर समस्याएँ ना खड़ी होतीं। आज भी यदि दोनों तरफ निष्पक्ष भाव से बुद्धिजीवी वर्ग समान विचारधारा वाला बन जाए तो समस्या का अहिंसक समाधान भी सम्भव है। धारा ३७० भी यदि समाप्त कर दी जाये तो आतंकवाद पर बहुत हद तक लगाम लग सकती है। वर्तमान में कश्मीर को विशेष दर्जा देने का कोई औचित्य नहीं है। आम जनता युद्ध नहीं चाहती है। चाहे वह पाकिस्तान की हो या हिन्दुस्तान की। अपनी सत्ता बनाये रखना या फिर अपनी सत्ता बनाना ही मुख्य उद्देश्य होता है। सद्बुद्धि से कार्य बनेगा और इसी की प्रार्थना परमात्मा से करते हैं।

शहीदी दिवस पर विशेष

वीरता और शौर्य की मिसाल रानी लक्ष्मीबाई

भारत में जब भी महिलाओं के सशक्तिकरण की बात होती है तो महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा जरूर होती है। रानी लक्ष्मीबाई न सिर्फ एक महान नाम है बल्कि वह एक आदर्श हैं सभी महिलाओं के लिए जो खुद को बहादुर मानती हैं और उनके लिए भी एक आदर्श हैं जो महिलाएँ सोचती हैं कि वह महिलाएँ हैं तो कुछ नहीं कर सकती। देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी उनकी प्रशंसा की थी और वह अपनी वीरता के किस्सों को लेकर किवदंती बन चुकी हैं।

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन : रानी लक्ष्मीबाई का जन्म १६ नवम्बर १८२८ को काशी के असीघाट, वाराणसी में हुआ था। इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था। इनका बचपन का नाम 'मणिकर्णिका' रखा गया परन्तु प्यार से मणिकर्णिका को 'मनु' पुकारा जाता था।

मनु जब मात्र चार साल की थी, तब उसकी माँ का निधन हो गया। पत्नी के निधन के बाद मोरोपंत मनु को लेकर झांसी चले गए। रानी लक्ष्मीबाई का बचपन उनके नाना के घर में बीता, जहाँ वे 'छबीली' कहकर पुकारी जाती थी। जब उनकी उम्र १२ साल की थी, तभी उनकी शादी झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ कर दी गई।

रानी लक्ष्मीबाई की शादी : उनकी शादी के बाद झांसी की आर्थिक स्थिति में अप्रत्याशित सुधार हुआ। इसके बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। अश्वारोहण और शास्त्र–संधान में निपुण महारानी लक्ष्मीबाई ने झांसी किले के अंदर ही महिला सेना खड़ी कर ली थी। जिसका संचालन वह स्वयं मर्दानी पोशाक पहनकर करती थी। उनके पति राजा गंगाधर राव यह सब देखकर प्रसन्न रहते। कुछ समय बाद रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया, पर कुछ ही महीने बाद बालक की मृत्यु हो गई।

मुसीबतों का पहाड़ : पुत्र वियोग के आघात से दुखी राजा ने २१ नवंबर १८५३ को प्राण त्याग दिए। झांसी शोक में डूब गई। अंग्रेजों ने अपनी कुटिल नीति के चलते झांसी पर चढ़ाई कर दी। रानी के तोपों से युद्ध करने की रणनीति बनाते हुए कड़कबिजली, धनगर्जन, भवानीशंकर आदि तोपों को किले पर अपने विश्वासपात्र तोपची के नेतृत्व में लगा दिया। खूब लड़ी मर्दानी वह तो.....

रानी लक्ष्मीबाई का चण्डी स्वरूप : १४ मार्च १८५७ से आठ दिन तक तोपें किले से आग उगलती रहीं। अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज लक्ष्मीबाई की किलेबंदी देखकर दंग रह गया। रानी रणचंडी का साक्षात रूप रखे पीठ पर दत्तक पुत्र दामोदर राव को बांधे भयंकर युद्ध करती रही। झांसी की मुट्ठी भर सेना ने रानी को सलाह दी कि वह कालपी की ओर चली जाएँ। झलकारी बाई और मुंदर सखियों ने भी रणभूमि में अपना खूब कौशल दिखाया। अपने विश्वसनीय चार–पाँच घुड़सवारों को लेकर रानी कालपी की ओर बढ़ी, अंग्रेज सैनिक रानी का पीछा करते रहे। कैप्टन वाकर ने उनका पीछा किया और उन्हें **शेष पृष्ठ 11 पर**

शहीद उधमसिंह

१३ मार्च सन् १६४० का दिन था। लंदन के 'कैक्सटन हॉल' में द रॉयल सेन्ट्रल एशियन सोसायटी द्वारा आयोजित समारोह में पंजाब के भूतपूर्व गर्वना सर साईकेल ओडायर भाषण कर रहे थे कि हॉल धोंय–धोंद की आबाजों से गूंज उठा। ओडास का शरीर गोलियां से छलनी हांकर, खून से लधपथ हुआ एक ओर लुढ़क गया। पूरे हॉल में सन्नाटा छा गया। मैंने जांलियावाला नरसंहार का बदला ले लिया है।' 'भारत माता की जय' कहकर गोलियां चलाने वाले युवक ने अपना पिस्तौल जमीन पर फैंक दिया। गोलियों की आबाज सुनकर हॉल में घुस आए पुलिस जवानों ने युवक को धर दबोचा। वह युवक था 'शहीद उधमसिंह'।

उधमसिंह का जन्म २० दिसम्बर १८६६ की पंजाब के सुनाम कस्बे में थी टहल सिंह काम्बोज के घर हुआ था। माता तो उसे बचपन में ही छोड़कर मृत्युलोक चली गई थी तथा कुछ वर्ष बाद ही पिता की भी मृत्यु हो गई। दोनों भाईयों को अमृतसर के अनाथालय में शरण मिली थी। उधमसिंह ने दसवीं कक्षा पास की थी तथा दस्तकारी भी सीखी। उन्हीं दिनों सन् १६१६ का बैसाखी पर्व आया। १३ अप्रैल के दिन अंग्रेजो ने जलियावाला बाग में एकत्र लोगों को चारों ओर से घिरवाकर गोलियों से भुनवा डाला। सैकड़ों बूढ़े बच्चे तथा महिलाएं तक इस नरसंहार के शिकार हुए। इस नृशस हत्याकाण्ड की घटना ने युवा उधमसिंह को पागल बना डाला था। उसने अपने साथियों के बीच गुस्से में तपतमाकर कहा था 'यदि उस समय मेरे हाथ में रिवालवर होता तो कई गोरों का खून बहाने के बाद स्वयं को गोली मारकर मर जाता।'

जांलियावाला नरसंहार की पटना में उधमसिंह के बगल में प्रतिशोध लेने की आग धधका डाली थी। उसने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया। महान क्रांतिकारी तथा आर्यसमास के प्रचारक भाइ परमानंद जी उन दिनों कालापानी की जेल से रिहा होकर लौटे तो उधम सिंह उनसे मिला देश की स्वाधीनता के बारे में बातें की। सन १६०६ में लन्दन जाकर कर्नल चाइली की हत्या करने वाले मदनलाल ढीगरा का उसने ऐतिहासिक वर्णन पढ़ा। अब तो उसने संकल्प ले लिया कि वह जांलियावाला बाग के नसंहार के लिए जिम्मेदार गवर्नर माइकेल ओडायर से बदला जरूर लेगा। उधमसिंह सरदार भगत सिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद के सम्पर्क में आए तथा क्रातिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गए। जेल से मुक्त होने के बाद वे अपने गाँव सुनाम में आकर रहने लगे। सन् १६३१ में सरदार भगतसिंह को फासी दी गई जो उधम सिंह के तन बदन में आग लग गई। उसे बारह बरस पहले जलियावाला नसंहार का बदला लेने का संकल्प याद आ गया। उधमसिंह क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण चार वर्ष की सजा काट चुके थे, अतः सरकार उनके नाम से परिचित थी। उन्होंने अपना नाम बदलकर मोहम्मद 'आजाद' रख लिया। सन १६३३ में वे जाली नाम से इग्लैंड पहुंचने में सफल हो गए। इंलैण्ड में वे गुप्त रूप से क्रांतिकारियों के साथ काम करने लगे। आखिर एक दिन इक्कीस साल पहले के बदला लेने के संकल्प को पूरा करन का समय आ ही गया, जब उन्होंने सर आडायर को अपनी गोलियों का निशाना बना डाला। बिटिश पुलिस में उधमसिंह को भारी यातनाएं दी किन्तु उन्हें झुकाया नहीं जा सका। आल्डमेले संन्ट्रल क्रिमिनल कोर्ट में उन पर आंडायर की हत्या का मुकदमा चलाया उन्हें फांसी की सजा सुना दी गई। सजा सुनकर भी उधमसिंह में 'बिटिश साम्राज्य का नाश हो' का नारा लगाया। ३१ जुलाई १६४० को उधम सिंह को लन्दन की जेल में फांसी पर लटका दिया गया। अपने अन्तिम बयान में उन्होंने कहा था। 'अमृतसर के जांलियावाला नरसंहार का ओडायर से बदला लेकर मैंने यह सिद्ध किया है कि हिन्दुस्तानी अब और ज्यादा गुलामी सहने को तैयार नहीं है। वृद्धावस्था तक कायरों की तरह जीवित रहने की अपेक्षा मातृभूमि को आजादी के लिए जवानी में फांसी पर चढ़ जाना मैंने अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझा है। शहीदों की गाथाएं पुस्तक से भाया।

स्व. श्री शिवकुमार गोयल

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 7 का

सभी के सहयोग से ही......

माना बल्कि भारतीय वायुसेना के साहस को सलाम भी किया है। इस साहसिक फैसले के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जितनी तारीफ की जाए कम है, लेकिन इससे भी अधिक तारीफ तो भारतीय वायुसेना की भी होनी चाहिए, उन कमांडरों की होनी चाहिए, जिनके अद्भुत शौर्य ने मिसाल कायम की है ऐसे जाबांजों को प्रणाम।

सेना का मनोबल बढ़ना जरूरी है : देश की सुरक्षा में हमारी तीनों सेना के जवान चौबीसों घंटे सीमाओं पर सीना तान कर अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। अपने घर परिवार सें दूर, भीषंण सर्दी–गर्मी एवं बरसात में भी हमारे जवानं प्रतिदिन अपने शौर्य व उत्साह से मातृभूमि व हमारी रक्षा कर रहे हैं। गत २६ फरवरी को सुबह पाकिस्तान के बालाकोट की पहाड़ियों में बने जैश–ए–मोहम्मद के आतंकी शिविरों पर भारतीय वायुसेना ने भीषण हमला किया जिसमें लगभग ३०० आतंकवादी मारे गए। उस समय तो सभी विपक्षी दलों ने एक स्वर में कहा कि यह भारतीय सेना की अभूतपूर्व विजय है। इसके लिए सेना और सरकार बधाई की पात्र हैं। परंतु जब उन्हें लगने लगा कि इसका लाभ प्रधानमंत्री मोदी एवं उनकी पार्टी को मिलेगा तो इसकी प्रमाणिकता पर संदेह करने लगे। कुछ राजैतिक दल कह रहे हैं कि बालाकोट के हवाई हमले में कोई आतंकी नहीं मारा गया। यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है। जिन लोगों को अपनी पार्टी की चिंता अधिक तथा देश की सुरक्षा की चिंता कम है वो ही ऐसा कह सकते हैं। देश की सुरक्षा के लिए हम सभी राजनैतिक संगठनों को एक होकर हमारी तीनों सेनाओं के जवानों का मनोबल बढ़ाना चाहिए। हमारा कर्तव्य है कि हम सेना का यथासंभव सहयोग करें। अपनी एकजुटता, धैर्य एवं संयम का परिचय दें, तभी हम आतंकवा नकस्लवाद को समाप्त कर सकेंगे।

शेष पृष्ठ 7 का

आतंकी तत्त्वों से यह..........

की जड़ें जमायी। २६ जुलाई, २००८ को अहमदाबाद में एक साथ २१ बम विस्फोट हुए थे, जिसमें ५० लोगों की जान गई थी। उस विस्फोट की जिम्मेदारी इण्डियन मुजाहिदीन ने ली थी। दरअसल सिमी के सदस्य ही आईएम में सक्रिय हो गए थे। वे तथ्य सिमी और इण्डियन मुजाहिदीन की कार्यशैली को समझने के लिए पर्याप्त होना चाहिए, फिर भी कुछ कथित सेक्युलर दलों के नेताओं ने सिमी से सम्बन्ध जारी रखा। याद रहे कि २०१२ में पश्चिम बंगाल के तत्कालीन डीजीपी एन मुखर्जी ने कहा था कि सिमी के जरिये आइएसआई ने माओवादियों से तालमेल बना रखा है। इसके अलावा हाल में केरल पुलिस ने वहाँ के हाईकोर्ट को यह बताया कि पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) सिमी का ही नया रूप है। पूर्व उप–राष्ट्रपति हामिद अंसारी जब गत वर्ष पीएफआई से जुड़े महिला संगठन के कार्यक्रम में केरल गए थे, तो उस पर भारी विवाद हुआ। इस पृष्ठभूमि में एनआइए की ओर से की गई गिरफ्तारी को देखना मौजूँ होगा। दुःख की बात है कि आइएस की बर्बरता की खबरें मिलते जाने पर भी राजनीतिक कारणों से कई दलों में कोई खांस चिन्ता नहीं देखी जा रही है। तथाकथित सेक्युलर बुद्धिजीवी भी बेपरवाह हैं। कुछ तो इस पर एनआइए का मजाक उड़ाने के लिए सक्रिय हो गए कि उसने सुतली बम बरामद किये। यह एक तरह से राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति प्रदर्शित की जाने वाली घोर अगम्भीरता ही है। इस अगम्भीरता से यही प्रकट हुआ कि अपने देश में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े सवालों को किस तरह संकीर्ण राजनीतिक चश्मे से देखने की आदत भी पनपने लगी है।

शेष पृष्ठ 2 का

भगवान श्रीराम ने किया.....

लोग डरते हैं। जगत् में सत्य ईश्वर के तुल्य है, सदा सत्य के ही आधार पर ध र्म स्थित है। सत्य ही सबकी जड़ है। सत्य से बढ़कर परमपद भी नहीं है। मैं सत्यप्रतिज्ञ हूँ और सत्य की शपथ खाकर पिता का सत्य–पालन स्वीकार कर चुका हूँ। अतः मैं पिता के आदेश का पालन अवश्य करूँगा। किसी लोभादि के कारणवश पिता के वचन का उल्लंघन नहीं करूँगा। जो व्यक्ति पथभ्रष्ट हो जाता है, उसके दिये हुए हव्य–कव्य देवता और पितर स्वीकार नहीं करते हैं। जिसका नीच, क्रूर, लोभी और पापाचारी पुरुषों ने सेवन किया है, ऐसे क्षात्र धर्म का मैं अवश्य त्याग करूँगा। पृथ्वी, कीर्ति, यश और लक्ष्मी–ये सब सदा सत्य पुरुष के पास रहते हैं। मैं पिता के समक्ष जो प्रतिज्ञा कर चुका हूँ, उसका त्याग नहीं करूँगा। श्रीराम ने जाबालि से कहा कि आपने वेदविरुद्ध मार्ग का आश्रय लिया है। आप घोर नास्तिक और धर्म के मार्ग से कोसों दूर हैं। ऐसी पाखण्डमयी बुद्धि के द्वारा अनुचित विचार का प्रचार करने वाले आपको मेरे पिता ने अपना याजक एवं मंत्री कैसे बना लिया? इस कार्य की मैं निन्दा करता हूँ। आपको पिताजी नहीं रखते, जैसे चोर दण्डनीय होता है, वैसे ही वेदविरुद्ध मार्ग का अवलम्बन करने वाला भी दण्डनीय है। जिसे दण्ड देने में असमर्थ हो, वैसे नास्तिक से वार्तालाप नहीं करना चाहिए।जब श्रीराम ने रोष भरे शब्दों में जाबालि को फटकारा तब उसने श्रीराम से कहा कि मैं नास्तिक नहीं हूँ और न ही नास्तिक के समान वचन बोलता हूँ। केवल आपको अयोध्या लौटाने के उद्देश्य से मैंने पूर्वोक्त बातें कही हैं। श्रीवशिष्ठ ने भी श्रीराम से कहा कि महर्षि जाबालि नास्तिक नहीं हैं। उन्हें धर्म और परलोक पर विश्वास है; परन्तु उन्होंने तुम्हें अयोध्या लौटाने की इच्छा से नास्तिकतापूर्ण बातें कही हैं।

शेष पृष्ठ 1 का

कश्मीर के पुलवामा में.........

सुरक्षाबलों ने इलाके को घेर लिया, तब आतंकियों ने उन पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में एक आतंकी मारा गया। हालांकि कुछ और आतंकियों ने समर्पण करने के बजाय गोलीबारी जारी रखी। इसके बाद शुक्रवार सुबह तक जवानों ने स्थिति पर नियंत्रण पाते हुए दो अन्य आतंकियों को मार गिराया। सूत्रों के मुताबिक, सुरक्षाबलों ने कुलगाम के बाटपोरा में भी सर्च ऑपरेशन शुरू किया। यहां आतंकियों की खोज में घरों की भी तलाशी ली जा रही है। इस बीच इलाके में इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई। उपद्रवियों से निपटने के लिए सेना की अतिरिक्त टुकड़ियां बुलाई गई हैं। सुरक्षाबलों ने पुलवामा के त्राल में २४ मई को कथित तौर पर अलकायदा के आतंकी जाकिर मूसा को मार गिराया था। मूसा बुरहान वानी की मौत के बाद हिजबुल का कमांडर बना था। बाद में उसने कश्मीर में अलकायदा से जुड़ा संगठन अंसार गजवत–उल–हिंद शुरू किया था। इसके बाद २८ मई को अनंतनाग जिले के कोकरनाग इलाके में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में दो आतंकी मारे गए थे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से कश्मीर में आंतकवादियों के पूर्ण सफाये की मांग की है। उन्होंने कहा है कि जब तक आंतकियों का पूर्ण सफाया नहीं होगा, तब तक कश्मीर से आंतकवाद समाप्त नहीं होगा।

गोवा टाइम्स

हिंदू राष्ट्र निर्मितीसाठी संप्रदायांनी व्यापकता अंगिकारावी!

संतोषजी महाराज, रामनाथी हिंदू अधिवेशनात मार्गदर्शन

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 4 का

इमली के औषधीय.......

अन्नानास में ज्यादा पाया जाता है। ये तत्व शरीर में पैदा होने वाले जहरों से दिमाग को नुकसान होने से बचाता है।

फास्फोरस : शरीर में गंधक (सल्फर) की कमी होने से त्वचा के रोग हो जाते हैं, जो खून के खराब होने का नतीजा है। इसके अलावा इसकी कमी से मधुमेह, जिगर के रोग भी होते हैं।

वैज्ञानिक उपयोग–इमली की पत्तियों व फूल का उपयोग : इमली की पत्तियों को पीसकर गुनगुन कर लेप लगाने से मोच में लाभ होता है। इमली के १० से १५ ग्राम पत्तों को ४०० मिलीलीटर पानी में पकाकर, एक चौथाई भाग शेष रहने पर छानकर पीने से अम्लयुक्त दस्त में लाभ होता है। पीलिया के मरीजों के लिए इमली के पत्ते और फूलों को पानी में उबाल लें, फिर उसे ठण्डा होने दें। उसके बाद उसके पानी को दिन में २ से ३ बार पीएँ। ऐसा करने से पीलिया से राहत मिलती है। फूल और पत्तों का जूस बनाकर, पीने से पाइल्स में भी आराम मिलता है।

छाल का उपयोग : इमली की छाल ऐसे मरीजों के लिए वरदान है। जिन्हें फालिज (लकवा) की समस्या है, ऐसे मरीजों को ६ महीनों तक इमली की छाल का लेप, प्रभावित अंगों पर, करने से फायदा होता है। जल जाने पर जले हुए स्थान पर इमली के छाल की भस्म को गाय के घी के साथ मिलाकर उपयोग में लाने से लाभ होता है।

बीज का उपयोग : इमली के बीज के पाउडर को नींबू के रस में मिलाकर दाद पर लगाने से दाद ठीक हो जाता है। इमली के बीज को भूनकर इसका पाउडर बना लें। पाउडर को दिन में २ से ३ बार दें। इस पाउडर के इस्तेमाल से जल्दी ही दस्त रुक जाएगा। थोड़ी मात्रा में इमली के बीजों का चूर्ण बनाकर सेवन करने से क्षय रोग (टी.बी.) के रोगियों को भी लाभ होता है। और खाँसी में खून और कफ के पीलेपन में कमी आती है। आँख में होने वाली फुंसी पर इमली का बीज रगड़कर, सेंक करने से लाभ होता है।

औषधीय गुण : पकी इमली की थोड़ी मात्रा तलवों और हाथ–पैर पर मलने से लू का असर कम होता है। अगर दिल में सूजन हो, तो इमली को बराबर मात्रा में मिश्री के साथ मिलाकर, रस पीने से सूजन कम होती है। कान के दर्द में इमली का रस, तिल के तेल के साथ मिलाकर, पकाकर डालने से लाभ होता है। उल्टियाँ होने पर इमली के गुदे का पानी बनाकर पिलाने से उल्टी बंद हो जाती है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये

द्विवार्षिक..300/- रुपये

आजीवन सदस्य..1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 6 का

भारत विरोधियों का.......

राष्ट्रों के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों से मोदी जी को अलंकृत किया जा सकता था। निःसंदेह पत्रकारिता के उच्च मापदंडों से प्रकाशक अनभिज्ञ नहीं होंगे फिर भी आज मीडिया जगत में अविश्वसनीय व स्वार्थी तत्वों की पहुँच बढ़ने से काले को सफेद व सफेद को काला बना कर प्रस्तुत करना सरल होता जा रहा है। मैं अधिक न लिखते हुए बस इतना ही चाहूंगा कि लेखक अपनी गलती माने चाहे न माने परंतु टाइम पत्रिका के प्रकाशक और सम्पादक को अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका के सम्मान को बचाये रखने के लिए इस लेख के लिये समस्त सभ्य समाज व पाठकों से एक बार क्षमा अवश्य मांगनी चाहिये।

शेष पृष्ठ 5 का

ग्लोबल वार्मिंग जलवायु.....

जाएँगे कई जीव।

- समुद्री क्षेत्र में होगा विस्तार, इसमें समा जायेंगे कई तटवर्ती क्षेत्र।
- मिले साक्ष्यों के अनुसार १६७१–२०१० के बीच समुद्र ने सोखी धरती की सबसे अधिक गर्मी।
- १५०० वाट के १४० अरब हेयर ड्रायर बराबर ऊर्जा समाई प्रतिवर्ष।

सन् २०१७ में लगाए गए अनुमान के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण आर्कटिक पर बर्फ के पिघलने से पृथ्वी के वातावरण में भयावह परिवर्तन आ सकते हैं। यह रिपोर्ट अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'द इकोनॉमिस्ट' में प्रकाशित हुई। इसका प्रभाव मानसून पर भी पड़ेगा। समुद्र के प्रवाह पर प्रभांव, प्रशांत महासागर में अलनीना का प्रभाव तेज होने के साथ भारतीय मानसून भी प्रभावित होगा। तापमान की वृद्धि के फसलों पर भी प्रभाव देखे जा सकते हैं जैसे–

- ५–१५ प्रतिशत मौजूदा फसल पैदावार में कमी।
- ३–१० प्रतिशत भारी वर्षा के अंतर्गत वर्षा की मात्रा में होने वाली वृद्धि।
- ५–१० प्रतिशत नदियों के बहाव में कमी।
- २००–४०० प्रतिशत जंगलों में लगने वाली आग से प्रभावित क्षेत्र के रकबे में होने वाली वृद्धि।

सन् १८६६ में पहली बार स्वीडिश वैज्ञानिक 'खाते आर्हीनियस' ने बताया कि जीवाश्म ईंधनों के प्रयोग से धरती का तापमान बढ़ रहा है। तमाम अध्ययन के परिणामों में इसकी पुष्टि की है। मानव लोभ से धरती के संसाधनों का क्षय और क्षरण जारी है। प्राणवायु दमघोंटू हो चली है। अमृत समान जल, मौतों और रोगों का बड़ा कारण बन चुका है, पृथ्वी की स्वाभाविक उर्वरा शक्ति को विषैले रसायन चाट चुके हैं। समुद्र तल ऊपर उठ रहा हैं आदि, जैसी समस्यायें उजागर हो रही हैं। **(शेष अगले अंक में)**

शेष पृष्ठ 9 का

वीरता और शौर्य की मिसाल........

घायल कर दिया।

अंतिम जंग का दृश्य : २२ मई, १८५७ को क्रांतिकारियों को कालपी छोड़कर ग्वालियर जाना पड़ा। १७ जून को फिर युद्ध हुआ। रानी के भयंकर प्रहारों से अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा। महारानी की विजय हुई। लेकिन १८ जून को ह्यूरोज स्वयं युद्धभूमि में आ डटा। रानी लक्ष्मीबाई ने दामोदर राव को रामचंद्र देशमुख को सौंप दिया, सोनरेखा नाले को रानी का घोड़ा पार नहीं कर सका। वहीं एक सैनिक ने पीछे से रानी पर तलवार से ऐसा जोरदार प्रहार किया कि उनके सिर का दाहिना भाग कट गया और आँख बाहर निकल आई। घायल होते हुए भी उन्होंने उस अंग्रेज सैनिक का काम तमाम कर दिया और फिर अपने प्राण त्याग दिए। १८ जून १८५७ को बाबा गंगादास की कुटिया में जहाँ इस वीर महारानी ने प्राणांत किया वहीं चिता बनाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। रानी लक्ष्मीबाई ने कम उम्र में ही साबित कर दिया कि वह सिर्फ बेहतरीन सेनापति हैं बल्कि कुशल प्रशासक भी हैं। वह महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाने की भी पक्षधर थीं। उन्होंने अपनी सेना में महिलाओं की भर्ती की थी। आज कुछ लोग जो खुद को महिला सशक्तिकरण का अगुआ बताते हैं वह भी स्त्रियों को सेना आदि में भेजने के खिलाफ हैं पर इन सब के लिए रानी लक्ष्मीबाई एक उदाहरण है कि अगर महिलाएँ चाहें तो कोई भी मुकाम हासिल कर सकती हैं।

शेष पृष्ठ 1 का

२०२३ तक भारत अखंड हिन्दू.......

हिन्दुओं का दूसरे संप्रदायों में धर्मातंरण हो गया था, उनका घर वापसी कराया जा रहा हैं। हिन्दू सभा वार्ता समाचार पत्र के प्रकाशन के माधम से हिन्दुओं में जाग्रति लाने का कार्य किया जा रहा है। हिन्दू महासभा ने देशभर में हिन्दुत्व के प्रतीक व राष्ट्रवादी पं० नाथूराम गोडसे की प्रतिमा लगाने का कार्य प्रारंभ किया है, ताकि धर्मनिरपेक्षतारूपी गांधीवादी विचारधारा का अंत हो जाये। हिन्दू महासभा शरीया अदालतों की तरह ही हिन्दू अदालतों का गठनकर हिन्दुत्व की दिशा में जागरूकता अभियान चला रही हैं। वीर सावरकर, भाई परमानन्द, पं० मदनमोहन मालवीय आदि की जयंती समारोह व बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह का आयोजन कर हिन्दुत्व विचारधारा को मजबूत करने का कार्य हिन्दू महासभा द्वारा किया जा रहा है। अधिवेशन में देश के विभिन्न प्रदेशों व क्षेत्रों से हिन्दू प्रतिनिधि उपस्थित थे। अधिवेशन २७ मई से चलकर ४ जून तक गोवा के रामनाथी मंदिर में आयोजित की गई।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री परवेज अशरफ के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप

रोजनामा राष्ट्रीय सहारा (१२ मार्च) के अनुसार पाकिस्तान के भ्रष्टाचार निरोधक न्यायालय ने नंदीपुर पावर परियोजना में हुए भ्रष्टाचार के आरोप में पूर्व प्रधानमंत्री राजा परवेज अशरफ और पूर्व विधि मंत्री बाबर अवान सहित सात आरोपियों को आरोपति घोषित किया है। अन्य आरोपियों में पूर्व विधि सचिव रियाज कैयानी, मसूद चिश्ती, परामर्शदाता शमिला महमूद, पूर्व सहसचिव रियाज महमूद और पूर्व सचिव शाहिद रफीक शामिल हैं। आरोपियों ने इन आरोपों से इन्कार किया है। इन आरोपियों पर यह आरोप है कि इस परियोजना में हुई देरी के कारण पाकिस्तान के खजाने को २७ अरब रुपये का नुकसान पहुंचा है। ज्ञातव्य है कि यह परियोजना पंजाब में पीपुल्स पार्टी के शासनकाल में शुरू की गई थी। जिससे सवा पांच सौ मेगावाट बिजली पैदा होने का दावा किया गया था। विभिन्न राजनीतिक दलों ने इस परियोजना में भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे और कहा था कि इस भ्रष्टाचार के कारण परियोजना को खटाई में डाला गया जिससे उसका खर्च बढ़कर २२ अरब से ५८ अरब तक पहुंच गया।

हमारा समाज (१३ मार्च) ने यह आरोप लगाया है कि इस परियोजना में अरबों रुपये की हेराफेरी हुई जिसके कारण पाकिस्तान दो दशक से बिजली की कमी को बुरी तरह से झेल रहा है और अब स्थिति इस हद तक खराब हो गई है कि हर रोज १२ से १८ घंटे तक लोडसेडिंग की जाती है। इसके कारण सारा विकास ठप है। पीपुल्स पार्टी की पंजाब सरकार ने जिला गुजरांवाला के नजदीक नंदीपुर में यह परियोजना लगाने का फैसला किया था और इसका ठेका एक चीनी कंपनी को दिया गया था। मगर यह कंपनी पाकिस्तान सरकार ने ब्लैक लिस्ट कर दी थी इसलिए इस परियोजना के प्रश्न पर जल और विद्युत मंत्रालय और कानून मंत्रालय के मतभेद उत्पन्न हो गए। विधि मंत्रालय ने इस परियोजना को नियमों के विरूद्ध बताया। सरकारी विभागों के विवाद के कारण इस परियोजना के लिए विदेश से आई ८५ मिलियन डॉलर की मशीनें कराची के गोदामों में पड़ी हुई खराब हो गईं। सितम्बर २०१२ में चीनी कंपनी ने इस समझौते को रद्द कर दिया और कहा कि इस सौदे में उसे ८५ मिलियन डॉलर का नुकसान हुआ है। २०१३ में नवाज शरीफ के सत्ता में आने के बाद पुनः इस परियोजना पर चर्चा हुई और चीनी कंपनी ने परियोजना शुरू करने का आश्वासन दिया। २०१४ में परियोजना शुरू होने की घोषणा की गई और इसका उद्घाटन भी कर दिया गया। मगर इस परियोजना से बिजली का उत्पादन शुरू न हुआ और पांच दिन के बाद इस कारखाने को बंद कर दिया गया। विशेषज्ञों ने यह दावा किया कि ये मशीनरी फर्निस ऑयल पर चलने के लिए डिजाइन की गई थी मगर बाद में इसे गैस पर चलाया गया। इंजिनियरों ने इस प्लांट को क्रूड ऑयल पर चलाने का प्रयास किया जिससे पांच दिनों में ही मशीनरी ठप हो गईं। चीनी कंपनी ने इस प्लांट की मरम्मत करने की पेशकश की मगर विशेषज्ञों ने कहा कि इस प्लांट से उत्पन्न होने वाली बिजली ४२ रुपये प्रति यूनिट पड़ रही है जो कि सबसे महंगी है। इसके साथ ही यह परियोजना खटाई में डाल दी गई। प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के शासनकाल में विशेषज्ञों द्वारा इस पूरी परियोजना की जांच करवाई जिसमें कई तरह के घोटाले उजागर हुए। २०१६ में प्लांट के रिकॉर्ड में आग लग गई और सारा रिकॉर्ड नष्ट हो गया। रिकॉर्ड नष्ट होने के कारण भ्रष्टाचार के सारे सबूत मिट गए। बाद में गार्डों ने पूछताछ में यह स्वीकार किया कि यह आग प्लांट के प्रमुख सुरक्षा अधिकारी के निर्देश पर लगाई गई थी। २०१५ में पाकिस्तान के ऑडिटर जनरल की रिपोर्ट पर भ्रष्टाचार विभाग ने इसकी जांच शुरू की। मगर इस जांच में अधिकारियों ने कोई सहयोग नहीं दिया और न ही संबंधित रिकॉर्ड ही उपलब्ध कराया। पाकिस्तानी संसद की सार्वजनिक लेखा समिति ने २०१७ में भ्रष्टाचार निरोधक विभाग को इसकी जांच का जिम्मा सौंपा। इस जांच के आधार पर अब यह मुकदमा चलाया गया है।

कबिरा खड़ा बजार में

अलगाववादियों का साथ देने वाले चारों खाने चित्त

२०१६ के लोकसभा चुनाव जम्मू–कश्मीर की दृष्टि से इसलिए विशेष रहे क्योंकि इतिहास में पहली बार हुआ कि किसी एक संसदीय क्षेत्र में तीन चरणों में मतदान कराया गया हो। राज्य में मतदान कमोबेश शांतिपूर्ण रहा। राज्य में जिस तरह दो–तीन महीने पहले अशांति का माहौल था उसको देखते हुए इस बार का शांतिपूर्ण मतदान एक बड़ी उपलब्धि है। हालांकि मतदान प्रतिशत के मामले में जरूर इस बार का चुनाव पिछले चुनावों की अपेक्षा निराशाजनक रहा। राज्य के जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की कुल ६ सीटों पर इस बार ४४ फीसदी मतदान दर्ज किया गया जबकि २०१४ में यह आंकड़ा ४६ प्रतिशत के आसपास था। क्षेत्रवार आंकड़ों को देखें तो लद्दाख में सर्वाधिक ७१ प्रतिशत और कश्मीर घाटी में १६ प्रतिशत वोट पड़े थे। गौरतलब है कि २०१४ के लोकसभा चुनावों में कश्मीर घाटी में मतदान का प्रतिशत ३१ रहा था। जम्मू–कश्मीर में इस बार के चुनावी मुद्दों पर गौर किया जाये तो राष्ट्रीय सुरक्षा और पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण रिश्ते अहम रहे। अलगाववादियों पर की जा रही कार्रवाई, आतंकवादियों के सफाये और आतंकियों को शरण देने वालों पर की जा रही कड़ी कार्रवाई जैसे मुद्दे कश्मीर घाटी में अहम चुनावी मुद्दे रहे तो जम्मू और लद्दाख क्षेत्र में विकास के अलावा राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय सर्वाधिक हावी रहा। घाटी के लोग हालांकि कम संख्या में मतदान करने निकले जबकि राज्य में सुरक्षा के मोर्चे पर व्यवस्था एकदम चाक–चौबंद थी। ऐसा लगा कि घाटी के लोग अलगाववादियों के चुनाव बहिष्कार के आह्वान में फँस कर रह गये जबकि विकास की मुख्यधारा के साथ जुड़ना राज्य के ज्यादा हित में है। पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती ने धारा ३७०, ३५–ए के मुद्दे पर जिस तरह राज्य के लोगों को गुमराह किया और जम्मू–कश्मीर के लिए अलग प्रधानमंत्री की माँग की उसने आम कश्मीरियों के मन में संशय पैदा किया और यह भी एक बड़ा कारण रहा कि लोग मतदान केंद्रों से दूर रहे। पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में जिस तरह भाजपा को आशातीत सफलता मिली थी उससे जम्मू–कश्मीर के क्षेत्रीय दलों को चिंता हुई कि भाजपा का यदि यहां प्रभाव बढ़ा तो कल को उसका मुख्यमंत्री भी बन सकता है। भाजपा को जिस तरह जम्मू में एकतरफा समर्थन मिलता है और लद्दाख में भी पार्टी की स्थिति अच्छी है उसको देखते हुए पीडीपी और नेशनल कांफ्रेंस की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। इसलिए इस बार भाजपा ने जहाँ देशभर में राष्ट्रवाद का मुद्दा प्रबल कर रखा था तो वहीं पीडीपी और नेशनल कांफ्रेंस कश्मीर के भारत में विलय की शर्तों की याद दिलाने में व्यस्त रहे। बहरहाल, अब चुनाव परिणामों के बाद राज्य की राजनीति किस करवट बैठती है, यह देखने वाली बात होगी।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 12 जून से 18 जून 2019 तक

प्राप्तेषु

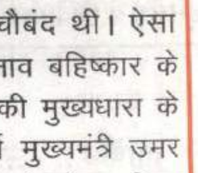

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 15, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।